मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध

HIN-675 शोध प्रबंध

श्रेयांक: 16

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

की उपाधि हेतु प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध

शोधार्थी

पवित्रा रमाकांत उसगांवकर

अनुक्रमांक: 22P0140023

PR Number: 201910329

मार्गदर्शक

ममता दीपक वेर्लेकर

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

Seal of the School

परीक्षक: ~~अनुराधा वागले~~
ममता दीपक वेर्लेकर

DECLARATION BY STUDENT

I hereby declare that the data presented in this Dissertation report entitled, मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध is based on the results of investigations carried out by me in the Discipline of Hindi at Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University under the Supervision of Mamata Deepak Verlekar and the same has not been submitted elsewhere for the award of a degree or diploma by me. Further, I understand that Goa University or its authorities will be not be responsible for the correctness of observations/experimental or other findings given the dissertation. I hereby authorize the University authorities to upload this dissertation on the dissertation repository or anywhere else as the UGC regulations demand and make it available to any one as needed.

Usgaonkar

Pavitra Ramakant Usgaonkar

22P0140023

Date:26/04/2024

Place: Goa University

COMPLETION CERTIFICATE

This is to certify that the dissertation report मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध is a bonafide work carried out by Ms Pavitra Ramakant Usgaonkar under my supervision in partial fulfilment of the requirements for the award of the degree of Master of Arts in the Discipline of Hindi at the Shenoi Goembab School of Languages and Literature, Goa University.

Mamata Deepak Verlekar

Date:26/04/2024

Prof Anuradha Wagle

Dean, SGSLL, GOA UNIVERSITY

GOA UNIVERSITY SHENOI GOEMBAB SCHOOL OF LANGUAGES & LITERATURE TALEIGAON PLATEAU

School Stamp

Date:26/04/2024

Place: Goa University

अनुक्रम

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	Declaration by Student Completion Certificate	I ii
	कृतज्ञता	iv
1	प्रस्तावना	2-7
2 मृदुला गर्ग व्यक्तित्व एवं कृतित्व	2.1 व्यक्तित्व 2.1.1 सामाजिक चेतना 2.2 प्रेरणा स्त्रोत 2.3 विशेषताएँ 2.4 कृतित्व 2.5 पुरसकार एवं सम्मान	8-23

3 स्त्री पुरुष संबंध	3.1 आदिकाल 3.2 मध्यकाल 3.3 आधुनिक काल	24-38
4 मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध	4.1 पति -पत्नी 4.2 विवाहेतर संबंध 4.3 माँ -बेटा 4.4 नौकर -मालिक	39-62
5	निष्कर्ष	63-66
	संदर्भ	67-73

कृतज्ञता

'मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध' इस लघु शोध प्रबंध को सफल बनाने में कई लोगों का योगदान रहा है। सर्वप्रथम मेरी मार्गदर्शक प्रा.'ममता दीपक वेरलेकर' का धन्यवाद ज्ञापन करना चाहूंगी क्योंकि इस प्रबंध के आदि से अंत तक उन्होंने मेरा सहयोग किया है। विषय चयन से लेकर प्रबंध के पूर्ण होने तक उन्होंने मेरी काफी मदद की है।हर कदम पर उन्होंने मेरा हौसला बढ़ाया है। मैं मेरी माता पिता का भी धन्यवाद ज्ञापन करना चाहूंगी क्योंकि यह प्रबंध मेरा था परंतु भागदौड़ वे दोनों कर रहे थे। वे कदम कदम पर मेरे साथ रहे हैं। गोवा विश्वविद्यालय और कृष्णदास शामा स्टेट सेंट्रल लाईब्रारी , पणजी गोवा की भी आभारी हूँ। अंत में उन सबको धन्यवाद कहना चाहूंगी जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की।

अध्याय 1

प्रस्तावना

प्रस्तावना

समकालीन कहानी, नई कहानी के विकास का अगला चरण है। समकालीन हिंदी कहानी का विकास उस समय हुआ है जब आर्थिक, सामाजिक, राजनीतीक तथा साहित्यिक क्षेत्र को बुनियादी रुप से साम्राज्यवाद ने प्रभावित किया। समकालीन हिंदी साहित्य एक नयी जीवन दृष्टि को दर्शाता है। साठोत्तरी हिंदी साहित्य में लेखिकाओं का महत्वपुर्ण योगदान रहा है। उनके साहित्य में संघर्षशील और विद्रोही चेतना के विभिन्न पहलुओं को दर्शाया गया हैं। उनके साहित्य में एक विद्रोह एवं कलात्मक सहजता की लय दिखायी देती है। इन्ह लेखिकाओं में सुप्रसिध्द नाम है मृदुला गर्ग। मृदुला गर्ग 21वीं सदी की सशक्त उपन्यासकार, कहानीकार तथा नाटककार के रुप में प्रसिध्द है। उनकी कहानीयों में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक,आर्थिक आदि विसंगतियों का बोध होता हैं। उनके साहित्य में विद्रोही भाव दिखायी देता है। महात्मा गांधी और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के विचारों का प्रभाव उनके साहित्य पर मिलता है। मृदुला गर्ग के साहित्य में विवाहपूर्व प्रेम के अपेक्षा विवाहेतर प्रेम का वर्णन मिलता है। उनके साहित्य में पीढ़ीगत अलगाव दिखायी देता है। वे स्त्री-पुरुष दोंनो को व्यक्ति के रुप में स्वीकार करती है।

शोध प्रबंध के विषय के चुनाव के समय किस विषय पर काम करना है यह सवाल था। बहुत सोचने के बाद मृदुला गर्ग के साहित्य पर काम करने का ख़याल आया। उनकी कहानियों से मैं परिचित नहीं थी। उनकी कहानियां पढ़ते वक्त महसूस किया कि उनके साहित्य में स्त्री- पुरुष संबंध के भिन्न-भिन्न रुप दिखायी देते हैं। उनकी कहानियाँ पढ़ते वक्त मुझे एक भिन्न दृष्टिकोण दिखायी दिया और तभी मैंने यह निश्चय किया कि उनकी कहानियों पर ही काम करना है।

इस शोध कार्य के लिए मृदुला गर्ग के सभी कहानी संग्रहों का चयन किया गया हैं। इसके लिए मूलतः 'संपूर्ण कहानियाँ' का आधार लिया है। उनके कुल 9 कहानी संग्रह प्रकाशित हैं। पत्र-पत्रिकाओं में छपे आलेख भी ली गए है। अंतर्जाल पर उपलब्ध साक्षात्कार का आधार लिया गया है। आलोचनात्मक ग्रंथो के माध्यम से उनके साहित्य का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

बदलते समय में स्त्री-पुरुष संबंधों में अलगाव दिखायी देता हैं। शारीरिक सूख न मिलने के कारण दांपत्येतर संबंध जन्म ले रहा है। इन्हीं समस्याओं के कारण वर्तमान समय में स्त्री-पुरुष संबंधों की स्थिति बदल गयी है। यही मृदला गर्ग के साहित्य में दर्शाया गया है।

इस शोध प्रबंध के दौरान मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व एवं कृतित्व को जानने की कोशिश की गयी है और इसके साथ ही उनकी काहानियों में स्त्री-पुरुष संबंधों पर बात करने का प्रयास किया गया हैं। इसकी प्रासंगिकता को भी प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

साहित्यिक पूनरावलोकन

“मृदुला गर्ग की काहानियां संवेदना और शिल्प” – सिंह वेद प्रकाश : इस शोध प्रबंध में कुल छः अध्याय है। प्रथम अध्याय मृदुला गर्ग के व्यक्तित्व और कृतित्व है। व्दितीय अध्याय में मृदुला गर्ग की कहानियों में विभिन्न संवेदनात्मक पहलुओं का चित्रण किया है। तृतीय अध्याय में नारी चेतना से जुड़े सभी विषयों का चित्रण किया है। चतुर्थ अध्याय में सामाजिक सरोकार विषयक दृष्टिकोण से संबंधित है। पाँचवा अध्याय भाषा एवं शिल्प है। अंतिम अध्याय निष्कर्ष है।

“मृदुला गर्ग का कथा साहित्य” – बगलकोट आर. एस् :प्रथम अध्याय में समकालीन महिलाओं का रचनात्मक परिचय दिया है। दूसरे अध्याय में मृदुला गर्ग के बचपन से व्यक्तित्व का परिचय दिया है। उनके संपूर्ण रचना संसार का परिचय प्रस्तुत किया गया है

तृतीय अध्याय उनके संपूर्ण उपन्यासों का विश्लेषण किया गया है। उनके संपूर्ण कहानियों का विश्लेषण किया है। अंत में निष्कर्ष दिया है।

मृदुला गर्ग का कथा साहित्य कथ्य और शिल्प”- राम राजेंद्र : प्रथम अध्याय समकालीन परिस्थितियों का विश्लेषण किया है। व्दितीय अध्याय मृदुला गर्ग के जीवन परिचय एवं रचना संसार है। मृदुला गर्ग के उपन्यासों का कथ्यगत विवेचन है। चैथे अध्याय में उनके उपन्यासों का शिल्पगत विवेचन किया गया है। पांचवा अध्याय उनकी कहानियों का कथ्यगत विशेषताएँ है। छठा अध्याय कहानियों का शिल्पगत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। सातवा अध्याय नारी विमर्श पर है। आठवा अध्याय आधुनिक कथा साहित्य में मृदुला गर्ग का योगदान है।

उपर्युक्त संदर्भ में मृदुला गर्ग के साहित्य पर काम हो चुका हैं लेकिन मृदुला गर्ग की काहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध, इस विषय पर मुख्य रूप से शोध काम कम दिखायी देता हैं।

इस शोध प्रबंध के लिए विशेषनात्मक पधिति का प्रयोग किया है। तुलनात्मक पध्दती भी अपनयी है। अंतरजाल के साक्षात्कार के जरिए उनके व्यक्तित्व को जाने का प्रयास किया है। विवरणात्मक पध्दती भी है।

अध्याय1: प्रस्तावना

इस अध्याय में मृदुला गर्ग का संक्षेप्त परिचय है। इसके साथ ही शोध समस्या, शोध प्रश्न, विषय चयन, शोध उद्देश, प्रासंगिकता पर बात की हैं। बदलते समय में स्त्री- पुरुष संबंध में कैसे बदलाव आता है, इस विषय पर भी संक्षिप्त में बात रखी है। साहित्यिक पुनर्वोलकन में मृदुला गर्ग के साहित्य पर काम किया है, उसका परिचय दिया है। इसमें कार्य प्रणाली एवं समय सीमा पर भी बात की है।

अध्याय2: मृदुला गर्ग का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

इस अध्याय में मृदुला गर्ग के बचपन से लेकर साहित्य जगत तक का परिचय हैं। मृदुला गर्ग का जन्म, शिक्षा, माता- पिता, सामाजिक चेतना का परिचय हैं। उनकी प्रेरणा स्त्रोत पर भी बात की है। उनके साहित्यिक विशेषताएँ प्रस्तुत की है। गर्ग के कृतित्व पर भी बात हुई है। उनके पूरे रचना

संसार के बारे में परिचय दिया हैं। उनके साहित्य का सारांश प्रस्तुत किया हैं। अंतः उनके पुरस्कार और सम्मान प्रस्तुत किया है।

अध्याय 3: स्त्री-पुरुष संबंध: विविध आयम

प्रस्तुत अध्याय में बदलते समय में स्त्री पुरुष संबंध में बदलाव को व्यक्त किया हैं। आदिकाल से आधुनिक काल तक स्त्री पुरुष संबंध में बदलाव की स्थिति को दिखाया है। महिला सुरक्षा के लिए अधिनियम बनाए गए और इस कारण महिलाओं में एक आत्मसम्मान की भावना देख सकते है।

अध्याय4: मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध

इस अध्याय में उनकी कहानियों की स्त्री स्थिती, स्त्री संघर्ष को रेखांकित किया हैं। आत्म निर्भर स्त्री के साथ परंपरागत चलने वाली स्त्रियों का ज़िक्र भी मिलता है। आधुनिक के साथ साथ पारंपरिक स्त्री का भी चित्रण मिलता है। दांपत्य संबंध के संघर्ष के साथ, विवहेतर संबंध में स्त्री की कामेच्छा की चाह को प्रस्तुत किया हैं। माँ बेटा या नौकर मालिक इस संबंध पर भी बात हुई हैं।

अध्याय5: निष्कर्ष

इसमें हर अध्याय के निष्कर्ष को सम्मिलित किया हैं।

संदर्भ सूची

मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, तारा अग्रवाल, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2004

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूल्यांकन, बागलकोट डॉ श्रीमती राजु, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2006

Shodhganga. Com

अध्याय 2

मृदुला गर्ग : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

मृदुला गर्ग- व्यक्तित्व और कृतित्व

2.1व्यक्तित्व

साठोत्तरी हिंदी कथा- साहित्य में लेखिकाओं का महत्वपूण योगदान रहा है। उनमें से ही एक नाम मृदुला गर्ग का है। मृदुला गर्ग अपनी सृजन प्रक्रिया में बहुत ही चर्चित लेखिका है।

मृदुला गर्ग का जन्म 25 अक्तुबऱ 1938, कलकत्ता शहर में हुआ था। वे एक अमीर परिवार से थी, तीन-चार वर्ष की आयु में ही उनके पिताजी श्री. बी.पी. जैन का तबादला दिल्ली होने के कारण उनकी पूरी पढ़ाई दिल्ली में हुई। इस कारण मृदुला गर्ग को नई जगह का अनुभव मिला और अलग-अलग लोगों के जीवन की समस्याओं को समझने का मौका मिला । बचपन में खराब सेहत के कारण तीन साल तक वे स्कुल नहीं जा पाई और घर पर ही रहकर अपनी पढ़ायी पूरी की। उहोंने दिल्ली स्कुल आँफ इकाँनामिकस से अर्थशास्त्र में एम.ए. किया है। दिल्ली के इंद्रप्रस्थ कॉलेज और जानकीदेवी कॉलेज में प्राध्यापिका के रुप में अध्यापन का काम किया। उनकी बचपन में देखभाल पिताजी ने की थी। बचपन से ही उन्हें साहित्य पढ़ने की रुची थी। उहोंने हिंदी अंग्रेजी दोनों भाषोओं का मौलिक व

अनुदित साहित्य पढ़ा है। लेखिका के पिता ने उन सब को उच्च शिक्षा प्राप्त करने व देर से विवाह करने एवं सबसे बढ़कर अपने बारे में विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया था।

मृदुला जी का विवाह सन् 1963 में श्री आनंदप्रकाश गर्ग के साथ हुआ था। आनंदप्रकाश अभियंता है। "विवाह के पश्चात् मृदुला गर्ग ने अपनी नौकरी छोड दी।... घर –गृहस्थी में तालमेल एवं सूचारुपन से निर्वहन हेतु इन्होंने अपनी नौकरी का त्याग करने में तनिक भी संकोच नहीं किया। इनकी प्रबल धारणा रही है कि ममता एवं पारिवारिक किमत पर नारि-नौकरी अर्थहिन है और संबंधो में कटुता एवं दूरी का कारण बनती है।" (1) विवाह के बाद वे बिहार, बंगला, कर्नाटक जैसी जगहों पर रही थी। उहोंने नात्यभिन्य भी छोड दिया क्योंकि उनका मानना था कि लेखन और नाटक दोनों करने में बच्चें की देखभाल के लिए समय कम बचता है। दूसरा लेखन में अंततः उन्हें रचनात्मक अभिव्यक्ति का वह माध्यम मिल गया जिसकी तलाश उन्हें बरसों से थी।

2.1.1सामाजिक चेतना

मृदुला गर्ग ने कर्नाटक में एक स्कुल चलाया जहाँ भारत के विभिन्न प्रदेशों से आए कर्मचारियों के बच्चे अलग-अलग भाषा बोलते थे। उन्हें हिंदी, स्थानिय भाषा कन्नड और अंग्रेज़ी के माध्यम से शिक्षा देने के लिए यह स्कुल चलाया गया था। जिससे आगे चलकर वे अन्य प्रदेशों के स्कूलों में प्रवेश पा सके। दूसरा कार्य, उन्होंने कुछ महिलाओं को साथ

लेकर एक संघ बनाया और निन्म वर्ग की महिलाओं को अच्छा जीवन देने का प्रयत्न किया है।

लेखिका कहती है – "समाज में अशिक्षित महिलाएं हैं। रास्ते के किनारे या गंदी नाली के ऊपर दुग्धी झोपडी डालकर जिंदगी बिता रही हैं। इन लोगों को आज तक पता नहीं हैं कि हमारा देश भारत हैं? वतन क्या होता है ? आदि तमाम बातें उनको कुछ भी पता नहीं है। इस हालत में इन लोगों को लेकर हम क्या समाज सेवा करेंग। "(2)

2.2प्रेरणा स्त्रोत

एक साहित्यकार को अपने आसपास के समाज, परिवेश, विशिष्ट घटनाओं आदि से प्रेरणा मिलती है। वह उससे ही प्रभावित होकर साहित्य की रचना करता है। मृदुला गर्ग के साहित्य में उस परिवेश का प्रभाव दिखाई देता है। विवाह के पश्चात् काम के सिलसिले में पति का तबादला होता रहा था। इस कारण उनको कई जगहों के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक परिस्थितियों को जानने का मौका मिला है और यही उनके साहित्य में झलकता है। साहित्य के बारे में मृदुला जी कहती है,- "साहित्य तो मैंने लिखना शुरु किया 1960 में, काफी परिपक्व अवस्था में, जबकि ज्यादातर लोग जल्दी ही लिखना शुरु कर देते हैं। वैसे साहित्य में रुचि मुझे बचपन से ही थी। हिंदी का भी और अंग्रेजी का भी।"(3) मूलतः लेखिका बंगला भाषी होने पर भी उसका उनपर कोई असर नहीं हुआ है। बचपन से ही उन्हें साहित्य में रुचि रही है। बंगाली भाषा के साहित्यिक महान हस्तियों की जीवनी

वे पढ़ चुकी हैं। शरतचंद्र चटर्जी, बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, हिंदी में प्रेमचंद, प्रसाद जैसे लेखकों को पढ़ा हैं। बचपन से लेकर आज तक समग्र साहित्यिक अध्ययन प्रभाव को लेकर लेखिका कहती है – "बचपन से ही अध्ययनशील, कैशोर्यावस्था में ही रवींद्रनाथ ठाकुर से लेकर महादेवी वर्मा एवं दास्तायवस्की से लेकर अलबेरो कामू तक के समग्र साहित्य का अध्ययन-मनन किया।" (4)

लेखिका पर स्वतंत्रता आन्दोलन का गहरा प्रभाव पड़ा है। उनपर भगतसिंग, नेताजी, महात्मा गांधी के विचारों का प्रभाव रहा हैं। वे गांधी जी को मानती थी, उनका आदर करती थी लेकिन भगतसिंग और नेताजी का प्रभाव उनपर ज्यादा रहा हैं। जो हमें 'अनित्य' जैसे उपन्यास में दिखायी देता है। मृदुला जी के मन में विभाजन के कारण अपराधबोध भावना भी दिखाई देती है। उनके 'मैं और मैं', 'अगली सुबह', 'शहर के नाम' जैसे रचनाओं में देख सकते हैं। उनकी रचनाओं में वैश्विकरण, मंडीकरण, यांत्रिकरण और वस्तुकरण का कुप्रभाव दिखाया है।

गाँव कस्बे में रहने वाले मध्य-निम्न वर्ग के स्त्री-पुरुष शोषण को लेखिका ने अपने साहित्य में बखूबी से उतारा है। वे भी उनके प्रेरणा बन गए। लेखिका बनने में उनके पिताजी का योगदान रहा है। उनसे भी उन्हे प्रेरणा मिली है। वे उन्हें पढ़ने-लिखने में प्रोत्साहन देते थे। साठोत्तरी महिला लेखिकाओं में मृदुला गर्ग को 'बोल्ड करार लेखिका' का नाम मिला है।

2.3विशेषताएं

साठोत्तरी हिंदी लेखिकाओं में मृदुला गर्ग ने अपनी एक अलग छाप बनाई है। उनके साहित्य में अपनी अलग विशेषताएँ हैं। उनकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ हैं-: मृदुला गर्ग के साहित्य में स्त्री के साथ पुरुष शोषण का भी चित्रण मिलता है। " मृदुला गर्ग जी अपनी साहित्य में आज के टूटते परिवेश में जीवन की परिवर्तनाशीलता और नारी की नई जीवन दृष्टि को अभिव्यक्ति दी है। उनकी कहानियों में नारी की दयनीय अवस्था, कामेच्छा, परपुरुष संबंध, इसके अलावा नारी नारी और पुरुष दोनों का शोषण होता हुआ नज़र आता है। ज्यादातर सेक्स को महत्व देने वाली उनकी कहानियाँ हैं। बदलते स्त्री -पुरुष संबंध, टूटते रिश्ते और पारिवारिक संबंधों के बदलाव को उजागर करनेवाली कहानियाँ हैं। " (4) उनके साहित्य में सेक्स को उन्मुक्त रूप से अभिव्यक्त किया गया है। उनके पिता का मानना था कि साहित्य में कुछ अश्लीलता नहीं होती है। मृदुला गर्ग के साहित्य में उनके विचारों का प्रभाव मिलता है।

इनकी कहानियों में उत्तर भारत एवं दक्षिण भारत के प्रदेशों को आधारित रचनाएँ मिलत हैं।

सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, मनोवेज्ञनिक, व्यंगात्मक, प्रेम एवं यौन चित्रण कहानियाँ लिखी गई है।

उन्होंने भोगा हुआ यथार्थ को बखूबी से अपनी रचनाओं में उतारा है। मार्क्सवाद का प्रभाव उनके साहित्य में मिलता है। उनकी कहानियों में पूंजीवाद तथा उच्चवर्ग की औपचारिक सांस्कृती पर प्रहार किया गया है और आम और औसत आदमी के जीवन को प्रस्तुत है। उनकी कहानियों में पुरानी रूढ़ियों और वर्जनाओं का अतिक्रमण दिखाई देता है।

2.4कृतित्व

मृदुला गर्ग ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में लगभग सभी विधाओं में अपना योगदान दिया हैं। उन्होंने उपन्यास, कहानी, निबंध, अनुवाद साहित्य आदि क्षेत्र में अपना लेखन कार्य किया हैं। सन् 1970-71 में पहली कहानी 'रुकावट' सारिका पत्रिका में कमलेश्वर के संपादन में छपी। उनकी 'कितनी कैदें' को कहानी पत्रिका व्दारा 1972 में प्रथम पुरस्कार मिला।

उनकी रचनाएं:-

कहानी संग्रह- उनके कुल 09 कहानी संग्रह प्रकाशित है।

- कितनी कैदें – 1975

यह प्रथम कहनी संग्रह है। इसमें ज्यादातर कहानियाँ सेक्स से संबंधित हैं। विवाहित स्त्रियां परपुरुष से संबंध रखती हैं, चाहे वह उच्च वर्ग से हो या मध्य वर्ग से। 'झुटपुटा' कहानी में किशोर अपनी मौसी रेखा के प्रति आकर्षित होता है। वह मौसी न रहकर उसके लिये

केवल रेखा ही है। इस प्रकर किशोर में सेक्स की प्रवृति को जगाने व उसको अभिव्यक्त किया है। 'अंदर – बाहर' जैसी कहानी में सेक्स संबंधित गालियों का प्रयोग किया है।

- टुकडा-टुकडा आदमी – 1977

इस कहानी संग्रह में उत्तर और दक्षिण भारत के विषयों को लेकर कहानियाँ लिखी गई हैं । ' टुकड़ा- टुकड़ा आदमी' कहानी में लेखिका ने सीमेंट कारखाने में काम करने वाले मजदूरों की समस्याओं को व्यक्त किया हैं। 'दूसरा चमत्कार' जैसी कहानी में संतों के माध्यम से काला बाज़ारी करने वालों का चित्रण किया हैं।

- डैफोडिल जल रहे हैं – 1978

इस कहानी संग्रह में तीन लंबी कहानियाँ संकलित हैं। 'स्थगित कल', 'मेरा' और 'डैफोडिल जल रहे हैं'। 'डैफोडिल जल रहे हैं' में ''बर्फिले परिवेश के चित्रण के सहारे स्वार्थी पुरुष का चित्रण किया गया है और नारी के करुण भाव का चित्रण किया है। 'मेरा' कहानी मध्यवर्गीय नौकरी करने वाले परीवार में बच्चे के जन्म के कारण स्त्री-पुरुष के बीच तनाव का चित्रण किया है। 'स्थगित कल' यह एक मनोवैज्ञानिक कहानी है, जिसमें मृत्यु के भय के कारण मानव मन का मानसिक संघर्ष दिखाई देता है।

- ग्लेशियर से – 1980

इस कहानी संग्रह में कुल 16 कहानियाँ संकलित हैं। 'ग्लेशियर से' कहानी में मिसेज दत्त खुद अपने से ही बातें करती हुई दिखाई देती है, मन के विचारों का टकराव है। 'खाली' कहानी में आज की कामकाजी नारी के लिए बच्चा पालना बोझ है, इसका चित्रण इस कहानी में है। 'तुक' कहानी में अलग अलग दृष्टियों के होते हुए भी किसी प्रकार नारी अपनी ओर से संवेदना के कारण पति से बंधी रहने के लिये मजबूर है।

- उर्फ सैम – 1982

उर्फ सैम कहानी संग्रह में कुल 12 कहानियाँ संकलित हैं। 'उर्फ सैम' कहानी में 'भारत और अमेरिका परिवेश की तुलना ही नहीं बल्कि पश्चिम का अंधानुकरण करने वाले व्यक्ति के बौने व्यक्तित्व को रेखांकित किया है।' पति पत्नी के बीच तनाव की स्थिती को मृदुला गर्ग ने 'वितृष्णा' नाम दिया है। शालिनी को अकेले जीवन बिताने की आदत के कारण पति पत्नी के तनाव का चित्रण किया गया है। 'बंसफल' 'दादा दादी के लाड़ प्यार तथा पोते पोती के अनुशासनहीन होने की स्थिति को दोहराने वाली कहानी है।' 'जिजीविषा' कहानी भारतीय पति पत्नी के जीवन पर आधारित है। 'उधार की हवा' एक बूढ़े व्यक्ति की कहानी है। उसकी स्वतंत्रता पर प्रश्न है। 'चौथा प्राणी' में युवक बिरेन ही मानसिक उथल-पुथल लक्षित होती है। 'मिजाज़' में आधुनिक सभ्यता के खोखलेपन का अध्ययन नारी पत्रों के माध्यम से हुआ है। 'पति मानस द्वारा नौकर छुड़वाए जाने के निर्णय पर श्वेता तर्क नहीं कर पाती और इस संदर्भ में

मांग में के मिज़ाज का खोखलापन भी चित्रित होता है।' 'अगली सुबह' में श्रीमती इंदिरा गाँधी की मृत्यु के बाद के दंगे फसाद का चित्रण मिलता है। 'नहीं' कहानी एक श्रमिक वर्ग पर आधारित है जहाँ एक बच्ची की मनोवैज्ञानिक स्थिति का चित्रण किया है।

- दुनिया का कायदा – 1983

इस संग्रह में उनकी चुनिंदा कहानियाँ हैं। इसमें केवल 'क्षुधापूर्ति' और ' सुबह भी अंधेरे से खाली नहीं' यह दोनों कहानियां किसी भी संग्रह में नहीं हैं। 'क्षुधापूर्ति' कहानी में गरीब बच्चे की विवशता को रेखांकित किया है।

उसकी भूख की समस्या का चित्रण किया है। वही दूसरी कहानी में पुलिस प्रशासन पर तिखा प्रहार किया है।

- शहर के नाम – 1990

यह संपूर्ण संग्रह नारी केंद्र है। 'तीन किलो की छोरी' अत्यंत निम्न जाति की एक स्त्री शादाबेन के इर्द गिर्द घूमने वाली कहानी है। 'करार' में चेरी नामक विलायती स्त्री भारत में आकर यहाँ के अंधविश्वासों पर आलोचना करती है। 'अनाड़ी' में एक गरीब असहायक कामकाजी किशोरी के प्रति संवेदना को व्यक्त किया है। ऐसी ही नारी केंद्र कहानियों का संकलन है।

- चर्चित कहानियाँ – 1993

इस संग्रह में मृदुला गर्ग की चैनीत कहानियों का संकलन हैं। उनकी चर्चित कहानियाँ ली गई हैं। जैसे: 'कितने कैंदे', ' हरी बिन्दी', 'डैफोडिल जल रहे हैं', ' ग्लेशियर से', 'तुक', 'उर्फ सैम', 'तीन किलो की छोरी' आदि कहानियाँ हैं।

- समागम – 1996

इसमें कुल आठ कहानियाँ हैं और हिंदी कहानी साहित्य लिखे गए लेख भी है। 'मीरा नाची' इस संकलन की पहली कहानी है। इस कहानी में लड़के और लड़की के बीच सामाजिक मतभेद को रेखांकित किया गया है। 'बर्फ़ बनी बारिश' पिता और बेटों के अजनबीयत रिश्तें को रेखांकित किया गया है। विदेशी पृष्ठभूमि में लिखी गई कहानी है। 'छत पर दस्तक' भी विदेशी परिवेश को रेखांकित करने वाली कहानी है। 'जेब' कहानी में नाटकीय 'धार्मिकों की अभावग्रस्तता और व्यवस्था का चित्रण किया गया है'।

<u>उपन्यास</u> – मृदुला गर्ग के कुल 06 उपन्यास प्रकाशित हैं।

- उसके हिस्से की धूप – 1975

यह मृदुला गर्ग का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास में प्रमुख तीन पात्र हैं, मनीषा, मनीषा का पति जितेन और मधुकर। मनीषा बेंगलोर के कॉलेज में हिंदी की प्रध्यापिका है। जितेन फैक्ट्री में काम करता है और परिवार के प्रति हमेशा उदास रहता है। एक दिन मनीषा अपनी सहेली के पास उदास मन से जाती है और अपनी व्यथा बताती है। तब वह उसे मधुकर से मिलाती है और उन दोनों में प्रेम संबंध शुरु होता है। मनीषा मधुकर से जितेन को मिलाती

है, उन दोनों में अर्थ व्यवस्था को लेकर बहस हो जाती है। मधुकर मनीषा को जितेन से तलाक़ लेने की बात करता है। वह उसके अनुसार ही करती है। सालों बाद मनीषा और जितेन फिर से मिलते हैं और उन दोनों का मिलाप होता है।

- वंशज – 1976

वंशज उपन्यास में दो पीढ़ियों के द्वंद्व को रेखांकित किया गया है। अंग्रेज़ शासन के दौर की कथा है। शुक्ल साहब का रहन-सहन एवं विचार अंग्रेजियत से प्रभावित है, दूसरी तरफ़ उनका बेटा इसके खिलाफ़ हैं। उसकी छोटी बेटी रेवा भी अपने भाई का साथ देती है परंतु पिता रेवा से ज्यादा प्यार करने के कारण सुधीर के मन में गहरा अंतराल उत्पन्न हो जाता है। माँ के देहांत के बाद शुक्ल साहब अपना कर्तव्य समझते हैं कि उसका बेटा अनुशासन सीख जाए इसलिए सुधीर को अनुशासन में लाने का प्रयास करता है परंतु वह और भी बिगड़ता है। इस कारण सुधीर कभी अपनी पत्नी से भी आत्मीय संबंध स्थापित नहीं कर पाता है। अपनी अन्तिम सांस के समय शुक्ल साहब अपनी संपूर्ण जायदाद अपने बेटे सुधीर के नाम करता है इस सदमे को बर्दाश्त न कर पा सकने की वजह से सुधीर की हालत गंभीर हो जाती है। वह अपना दिमागी संतुलन खो बैठता है। इस कहानी में दिखाया गया है कि हम कितना भी पुत्री को प्यार क्यों ना करे परंतु अंत में जब जायदाद की बात आती है, हिस्सेदारी की बात आती है तब हमेशा बेटे को ही मिलती है।

- चितकोबरा – 1979

इस उपन्यास में दो प्रेमी की कथा है। विदेश से आया रिचर्ड भारतीय मनु से प्यार कर बैठता है। यह प्रेम अशारीरिक है परंतु दोनों अपने अपने साथी से असंतुष्ट हैं। "चित्तकोबरा' की कहानी अपने मूल में सार्वकालिक है और परिवेश में अत्यंत आधुनिक। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि सेक्स के माध्यम से अध्यात्म तक पहुँचा जा सकता है और यह भी नहीं कहा जाता कि प्रेमहीन सेक्स विकृति के अलावा कुछ दे सकता है। इतना तो जरूर कहा जाता है कि सेक्स प्रेम की अभिव्यक्ति के राह का एक पड़ाव है।"(5) इस उपन्यास के अंत में प्रेम से ज्यादा सेक्स के महत्त्व का बोध होता है। एक प्रेमहिन संबंध का बोध होता है।

- अनित्य – 1980

भगत सिंह को फांसी की सज़ा होने के बाद लेखिका की स्थिति को व्यक्त किया है। उन्होंने ऐतिहासिक घटना को लेकर राजनीतिक सोच मिलाकर यह उपन्यास लिखा है।

- मैं और मैं – 1984

पहली मैं माधवी और दूसरा मैं कौशल है। माधवी का जीवन सुखमय था। माधवी लेखिका थी और उसका पति फैक्टरी चलाता था। इस सुखी जीवन में कौशल का आगमन होता है। कौशल एक प्रगतिशील लेखक है। वह केवल माधवी के पैसों के लिए उससे संबंध बनाए हैं। झूठ और फरेब का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है।

- कठगुलाब – 1996

इस उपन्यास में एक नायिका नहीं है बल्कि अनेक स्त्रियां अपनी कथा सुनाती हैं। यहाँ नारी पर हो रहे आर्थिक, शारीरिक एवं बौद्धिक शोषण को रेखांकित किया गया है। इसके प्रतिउत्तर में स्त्रियों ने अपने आप को सिद्ध करने का प्रयास किया है।

नाटक

- एक और अजनबी – 1978
- जादू का कालीन (बाल नाटक) – 1993
- तीन कैदें – 1996

लेख संग्रह

- रंग–ढंग – 1995
- चुकते नहीं सवाल – 1999

संस्मरण

- दीदी की याद में – 1998
- एक महा आख्यान लघु उपन्यास सा निबट गया – 1998

अनुवाद

- हिंदी से अंग्रेजी
    - 'उसके हिस्से की धूप' का 'A Touch of Sun'
    - 'डेफोडिल जल रहे हैं' का 'efodils on Fire'
    - 'अगली सुबह' का 'The Morning After' से अनुदित किया।

- अंग्रेजी से हिंदी
  - ‘Man Never Knows’ का ‘एक तिकोना दायरा’
  - ‘Bride From The Hills’ का ‘दुलहिन एक पहाड की’

अनुवाद किया।

2.5 पुरस्कार और सम्मान

- ‘कितनी कैदें’ कहानी को सन् 1972 में सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार मिला है।
- ‘उसके हिस्से की धूप’ मध्यप्रदेश साहित्य परिषद व्दारा ‘महाराजा वीरसिंह पुरस्कार’ से सन् 1975 में पुरस्कृत किया।
- एक और अजनबी नाटक को सन् 1978 में आकाशवाणी व्दारा पुरस्कार मिला।
- ‘जादु का कालीन’बाल नाटक को मध्य प्रदेश साहित्य परिषद से ‘सेठगोविंददास पुरस्कार’ सन् 1993 में प्राप्त।
- संपूर्ण साहित्य के आधार पर सन् 1988 हिंदी आकदमी का ‘साहित्यकार सम्मान’ प्राप्त हुआ है।
- कठगुलाब के लिए उन्हें व्यास सम्मान से नवाज़ा गया ह

संदर्भ सूची

1. डॉ तारा अग्रवाल, मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, विद्या प्रकाशन, कानपुर 2004

2. डाँ राजु बागलकोट (श्रीमती)मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूत्याकनं। अमन प्रकाशन :कानपुर, 2006 पृ36

3. वही पृ34

4. वही पृ34

5. वही पृ 25

6. डाँ।राजु बागलकोट (श्रीमती) । मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूत्याकनं। अमन प्रकाशन :कानपुर, 2006।

7. डाँ। किरणबाला जाजू (मुंदडा)। मृदुला गर्ग के साहित्य में चित्रित समाज। अमन प्रकाशन :कानपुर, 2012।

8डॉ। तारा अग्रवाल। मृदुला गर्ग का कथा साहित्य।विद्या प्रकाशन :कानपुर , 2004।

अध्याय 3

भारत में स्त्री -पुरुष संबंध का विकास

स्त्री-पुरुष संबंध

बदलते समय में स्त्री-पुरुष संबंध में भी बदलाव आया है। स्त्री आज हर रुप से सक्षम है परंतु इस पितृसत्तामक समाज के मानसिकता से जकड़ी हुई है। पुरुष स्त्री पर अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहता है। आज उसके रहन-सहन पर सवाल उठाया जाता है। प्राचीन काल में स्त्रीयों को सम्मान दिया जाता था। स्त्री के बिना पुरुष को अपुर्ण माना है। यहां 'पुरुष शब्द की निर्मिती स्त्री, संतान और व्यक्ति की समिष्टि से मानी गई है।

3.1आदिकाल

ऋग्वैदिक काल में स्त्री और पुरुष को समान रुप से देखा जाता था। पिता घर का प्रमुख और माता को गृहलक्ष्मी कहा जाता था। स्त्रीयां पति की संरक्षण में रहती थी। यहां माता का स्थान प्रमुख है लेकिन एक पुत्री के रुप में स्त्री का स्थान गौण है। उन्हें अपने पिता एवं भाई पर निर्भर रहना पड़ता था अतएव दहेज देकर उनकी शादी कर दी जाती है। कभी-कभी विवाह के पश्चात पुत्र के अभाव के कारण पुत्री अपने पिता के घर में रहती है जिन्हे ‘पुत्रीका' कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण में वर्णन मिलता है जहां पत्नी को पति का अर्ध्दांश माना है। पुरुष विवाह कर बच्चा पैदा न करे, उसे अपुर्ण कहा गया है। स्त्री प्राप्ति के बाद ही उसे पूर्ण कहते है। इस काल में स्त्रियाँ राजनीतिक संस्थाओं में भाग लेती थीं। युवक- युवतियां स्वच्छंद रुप से मिला करते थे। यहां स्त्री अपने मनोनुकुल विवाह करती है। उहोंने सामाजिक, राजनितीक, धार्मिक, युध्द क्षेत्र में योगदान दिया था परंतु उन्हें संपत्ति

पर कोई अधिकार नहीं था। इस काल में विधवाओं का कम जिक्र मिलता है लेकिन नियोग प्रथा मिलती है। ऋग्वेद में पुत्र प्राप्ती के लिए अनेक प्रार्थनाएं मिलती है, यहां पुत्र को आज्ञाकारी एवं पिता के कार्य में सहायता के रुप में महत्व है। इस काल में भाई-बहन शारीरिक संबंध रखते थे और उसे उत्पन्न संतान के साथ अपना जीवन व्यतित करते थे।

उत्तरवैदिक काल में स्त्रियों की स्थिती में बदलाव दिखायी देता है। इस काल में कही न कही पुरुष वर्चस्व हावी होने लगा था। यह समय ब्राह्मण ,उपनिषद, अथर्ववेद का था, जहां ग्रंथों के माध्यम से स्त्रीयों की निन्दा होने लगी थी। स्त्री को निम्न स्तर पर देखा गया था। मनुस्मृतियां लिखी जहां स्त्रियों के कौमार्य व विवाहीत स्त्रीयों की शुध्दता पर ज़ोर दिया गया है।अथर्ववेद में कई मंत्र मिलते है जिसमें कन्या जन्म को अनिच्छित माना गया है। जादु-टोणा करते ताकी स्त्री का जन्म न हो सके। केवल उच्चकुल की स्त्रियों के लिए ही शिक्षा की सुविधा उपलब्ध थी। 'शुक्ल युजर्वेद में शिक्षित स्त्री पुरुष को ही विवाह के योग्य बताया गया है। अशिक्षित स्त्रीयों की स्थिती अच्छी नहीं थी ,उनके पति को यम कहा गया है। इस काल में स्त्रियों की स्थिती गिरती रहती है लेकिन उनका हवन,पूजा पाठ में सम्मिलित किया जाता था। 'ऐतरेय ब्राह्मण और मैत्रायणी संहिता में कहा गया है कि स्त्रियाँ समिति में प्रवेश नहीं कर सकती हैं। (१) उन्हें लोभी, लालची, अंहकारी आदि कहकर संबोधित किया है। 'मैत्रायणी संहिता के अनुसार स्त्रियाँ द्युत और मद्यपान के समान हैं।(२) मानव समाज में स्त्रियों को एक दोषी के रुप में देखी जाती थी परंतु उन्हें यज्ञादि में सहभाग मिलता है। विधवा विवाह पर कहा गया है कि मृत पति के साथ पत्नी को लेटा दिया जाता था और विधी

संपन्न होने के बाद पति का छोटा भाई उसे उठाता था। वही उसका दूसरा पति है। इस काल में अविवाहीत स्त्रीयों के पुत्रों को भी सम्मान दिया जाता था।

सूत्र एवं महाकाव्य युग में स्त्रीयों की स्थिती दयनीय हो गई। उनपर कठोर नियम बनाए गए थे। उनपर राजनितिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं वैयक्तिक प्रतिबंध लगाया जाता था। जन्म से मृत्यु तक उन्हें पुरुष के नियंत्रण में रहने का आदेश दिया जाता था। उन्हें भोग विलास की वस्तु समझा जाता था। बहु विवाह का प्रचलन था। उच्च कुल के पुरुष बहु पत्तियां रखते थे। स्त्री हरण और नियोग प्रथा थी। सती प्रथा का प्रचलन था। विवाह अति आवश्यक हो गया । रामायण के अनुसार ‘पतिविहीन स्त्री का जीवन तंत्रविहीन वीणा तथा चक्रविहीन रथ के समान निरर्थक समझा जाता था।' (३) महाभारत में गृहणी को गृह कहा है। पर्दा प्रथा का भी उल्लेख मिलता है। पुत्री के जन्म पर खेद होता था लेकिन पिता के लिए वह प्रेम पात्र थी। शुभ कार्य के लिए कुमारी कन्याओं की उपस्थिती शुभ मानी जाती थी। ‘रामायण में दृष्ट पत्नी के परित्याग की अनुमति दी गयी है। पुत्री को विवाह पर धन देने की प्रथा मिलती है।' महाभारत में कन्या जन्म पर कोई खेद नहीं मनाया जाता है। स्त्री का प्रथम गुण चरित्र माना गया है। उनकी मान्यता है कि देवता वहां वास करते है जहां स्त्रियों का सम्मान किया जाता हैं। इस काल में स्त्रियों की स्थिती सम्मानजनक हैं। बौध्द काल में नियोग प्रथा प्रचलन में थी। विधवा स्त्री का रहन-सहन सादा होता था और मधु, मांस, मदिरा के सेवन पर पाबंधी थी एवं अपने परिवार के बुज़ुर्गों के आदेश पर ही पति के छोटे भाई के साथ संबंध स्थापित कर पुत्र प्राप्त करती थी। भिक्षुणी को आदर भाव के बदले व्याभिचारी के रुप

में देखते थे। जैन संघ की मान्यता के अनुसार अगर कोई साध्वी गर्भवती होती है तो उसे संघ से न निकालकर उस व्यक्ति को राजा के हाथों दंड दिया जाता था।

मौर्य काल से स्त्री की स्थिती में काफ़ी बदलाव आया है। उन्हें परतंत्रता एवं सकीर्णता को झेलना पड़ता हैं। कम आयु में विवाह के बंधन में बंधने के कारण वे शिक्षा से वंचित रहती थीं। मेगास्थनीज के अनुसार स्त्री को बेचा भी जाता था और सती प्रथा भी थी। लेकिन कौटिल्य कहते है कि स्त्रीयों के प्रति दूर्व्यवहार पर दंड दिया जाता है इसमें राजकर्मचारी भी शामिल हैं।

मौर्य साम्राज्य में पुरुष स्त्री का वध करते थे। स्त्री की हत्या ब्रह्म हत्या के समान थी इसलिए इस अपराध के लिए उन्हें दंड दिया जाता थी। स्त्री के शरीरिक शुद्धता पर ज्यादा ज़ोर दिया जाता था। उन्हें अपने जीवन की सभी समस्याओं को छोड़कर पति की सेवा करनी होती थी। पुनर्विवाह की प्रथा थी। पुत्र के अभाव से वे पुनर्विवाह कर सकते थे। तलाक को 'मोक्ष' शब्द से संबोधित करते हुए कौटिल्य कहते हैं कि 'मोक्ष का अधिकार पति और पत्नी दोनों को था। वह व्यभिचारी, प्रवासी, पतित, राजद्रोही, खूनी, नपुंसक पतियों का स्त्री परित्याग कर सकती थी।' इस काल में स्त्री का स्थान महत्वपूर्ण नहीं था, उनका चरित्र शारीरिक शुद्धता पर निर्भर था। सती प्रथी का भी प्रचलन था।

शक-कुषाण युग में स्त्रियों की सामाजिक स्थिति बिगड़ती जा रही थी। स्मृति ग्रंथो में स्त्रियों की हीनता का परिचय मिलता है। उन्हें पूजा पाठ में कोई हिस्सा नहीं दिया जाता था, संपत्ति पर कोई अधिकार नहीं था, शिक्षा का अभाव था।पुनः विवाह पर रोक थी विधवाओं की स्थिति भी अच्छी

नहीं थी। समाज में स्त्रियों की परतंत्रता विधवाओं के संकटमय जीवन के कारण परिव्राजिकाओं की संख्या बढ़ती जा रही थी। राजवंशों में पर्दा प्रथा का प्रचलन था। स्त्रियों को बड़ों के सामने पर्दे में आना उचित मानते थे।

गुप्त कालीन स्त्रियों के संदर्भ में केवल उच्च कुलीन स्त्रियों का वर्णन मिलता है। उन्हें अर्धांगिनी से संबोधित किया जाता है। उन्हें हर सुख सुविधा उपलब्ध थी। उच्च कुल की स्त्रियों के विदुषी एवं कलाकार होने का प्रमाण संभ्रांत कुल की स्त्रियां इतिहास, पुराण का अध्ययन करती है। स्त्री बहु विवाह करती कर सकती है अगर दूसरा वर श्रेष्ठ है। पहले तीन उच्च जातियों की स्त्रियों को किसी भी जाति के साथ विवाह की अनुमति दी जाती थी। परंतु वैश्य एवं शुद्र को केवल उनकी जाति में ही विवाह करना उचित समझा जाता था, ऐसा याज्ञवल्क्य का मानना था। परिवार में पुरुषों को पैतृक संपत्ति प्राप्त होती है और स्त्रियों का विवाह 12 या 13 वर्ष की आयु में हो जाता था। इस काल में सती प्रथा बहुत कम थी और विधवा का पुनर्विवाह नहीं होता था। अपुत्र पति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति पर अधिकार उसकी विधवा को था। उनका जीवन सादा था,उनको वेदमंत्रों उच्चारण का अधिकार नहीं था। याज्ञवल्क्य के अनुसार ‘पति को पत्नी की सुविधा का पूरा ध्यान रखना चाहिए क्योंकि वह पुत्र प्राप्त करके इस संसार में सुख और परलोक में स्वर्ग प्राप्त कर सकता है। आगे वे कहते है- आज्ञाकारी पुत्रों को जन्म देने वाली पत्नी का परित्याग करने वाले पति को उसकी संपत्ति का तिहाई भाग उनकी पत्नी को देना चाहिए। पत्नी परिवार की सदस्यों का ध्यान रखती थी। पति विदेश यात्रा पर होने के कारण वे न सज-धजती थी और न ही उत्सवों में भाग लेती थी परंतु पति घर आने के बाद साजश्रृगांर एवं उत्सवों में बढ़ चढ़कर भाग लिया करती थी।

याज्ञवल्क्य स्मृति से ज्ञात होता है कि ग्लालों, शराब बनाने वालों, नटों, धोबियों और शिकारीयों की पत्नियां अपने पतियों के व्यवसाय में सहायता करती थीं। याज्ञवल्क्य ने तीन वेश्याओं का उल्लेख किया है- पहली लोगों का मनोरंजन करने वाली, दूसरी दासी या पतित स्त्रियां जिसे राजा द्वारा अपने मनोरंजन के लिए रखा जाता था और तीसरी गणिका जिनका समाज में आदर था। उनको देवदासियों के रूप में मंदिरों में रखा जाता था। मनु के अनुसार 'जिस स्त्री को पति ने छोड़ दिया हो या जो विधवा हो गई हो यदि वह अपनी इच्छा से दूसरा विवाह करें तो वह पुनर्भ तथा उसकी संतान पनौर्भव कहा जाता था। इस काल में उच्च कुल की स्त्रियों की स्थिति का ही चित्रण मिलता है। जिनकी स्थिति बेहतर थी और वे हर कार्य में सक्षम थी।

हर्षवर्धन काल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी। उच्च कुल की स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। शासक दासियों से विवाह करते थे। बाल विवाह, पर्दा प्रथा प्रचलित थी। विधवाओं का पुनर्विवाह नहीं कराया जाता था। स्त्री केवल भोग विलास की वस्तु थी। कादंबरी के अनुसार पुंडलीक की मृत्यु के बाद महाश्वेता ने सती होने का निर्णय लिया था। इस तरह सती प्रथा भी थी इसका पता चलता है। यह विधवाओं पर निर्भर करता है कि उन्हें सती होना है या नहीं उन्हें विवश नहीं कर सकते थे। राजघरानों की स्त्रियों को राजनीति में हिस्सा था। इस काल में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव दिखाई देता है। आदिकाल में स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार दिखाई देता है। धीरे-धीरे इस स्थिति में बदलाव होता है, स्त्रियों की स्थिति दैनिक होती है। उन पर पितृसत्तात्मक सोच हावी होने लगती है । यही से मध्यकाल का आरंभ है।

3.2 मध्यकाल

मध्यकाल में स्त्रियों की स्थिति दयनीय थी। उन्हे निम्न जाति से भी तुच्छ माना जाता था। वह खेती में अपने पति का हाथ बटाती थी। इस काल में स्त्रियों को कम वेतन दिया जाता था। स्त्री श्रम को कम आका जाता था। अलाउद्दीन खिलजी के समय पुरुषों को 10 से 15 टंका का श्रमदान मिलता था और स्त्री को 5 से 12 टांका मिलता था। धन के नाम पर भी स्त्रियों का शोषण होता था। पुरुष स्त्री से अपने आप को श्रेष्ठ समझता था और स्त्री को अपनी स्थिति में बंधे रहने के लिए भगवान की मर्जी बताई जाती थी। स्त्री चरित्र पर सवाल उठाया जाताथा। मनु के अनुसार पुरुष के चरित्र को बिगाड़ना और उसे पथभ्रष्ट करना स्त्री की प्रकृति का अंग है। शेख अहमद सरहिंदी महान सूफी के अनुसार "... खुदा ने स्त्री को सौंदर्य बक्शा ही इसीलिए है कि पुरुष उसका उपयोग करें"। आगे सूफी ने कहा है कि "स्त्री इतनी दुष्ट प्रकृति के होती है कि व्यभिचार के हर मामले में प्रमुख रूप से उसी को दोषी मानना चाहिए क्योंकि ऐसा दुष्टकृत्य उसकी स्वीकृति के बिना संभव नहीं हो सकता। स्त्रियों को कमज़ोर समझा जाता था और उनके भोग विलास की वस्तु के समान देखा जाता था। स्त्री शिक्षा पर प्रतिबंध था। उन पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी ताकि वे शिक्षा ग्रहण न कर सके, उच्च कुल की स्त्रियों को ही शिक्षा की अनुमति थी। इस काल में स्त्रियों के लिए युद्ध होने लगे थे। स्त्रियों का अपहरण, बलात्कार होते थे। सती प्रथा प्रचलन में थी। पति की मृत्यु के बाद हिंदू स्त्रियाँ जौहर करती थी और मुसलमान स्त्रियाँ विष ग्रहण करती थी, यह स्थिति राजघरानों

में ज्यादा पाई जाती थी। लड़की के जन्म को अपशगुन माना जाता था और कन्या हत्या का प्रचलन था।

3.3 आधुनिक काल

यह अंग्रेज़ शासक का दौर था। इस शासन में हर तरफ हाहाकार मचा हुआ था। महिलाओं की स्थिति भी दयनीय थी, परन्तु इस समय कई समाज सुधार आंदोलन हुए है। जिसके कारण स्त्रियों की स्थिति में काफी सुधार आया। '1817 में सुप्रीम कोर्ट के मुख्य पंडित मृत्युंजय विद्यालंकर ने घोषणा की कि सती की कोई शास्त्रीय मान्यता नहीं है। इसके एक वर्ष बाद यानी 1818 में बंगला के तत्कालीन प्रांतीय गवर्नर विलियम बैंटिंक ने प्रांत में सती प्रथा पर रोक लगा दी थी'।(7) उन्होंने 1829 में सती में निर्मूलन एक्ट पास किया था। 1830 कलकत्ता में हिंदू रूढ़िवादियों ने धर्मसभा की स्थापना की और उसमें गवर्नर जनरल को कानून समाप्त करने की याचना दी थी। 10 साल बाद इसके उत्तर में भारतीय दंड संहिता ने स्वच्छिक और जबरन सती में वैभिन्य दर्शाते हुए अपनी इच्छा अनुसार सती होने को कानूनी कवच प्रदान कर दिया।

19वी सदी के पहले सती कभी कभार होती थी परंतु इस निर्मूलन के बाद हर रोज़ एक स्त्री सती होती थी। 1829 ई. बंगाल कोड में अधिनियम बनाया कि "किसी हिंदू विधवा स्त्री को सती बनाने उसे जलाने या जिंदा दफ़न करने की कोशिश गैरकानुनी तथा अपराधिक अदालतों व्दारा दंडनीय है।"(8) 19 दिसंबर 1829 को स्त्री उन्मुर्लन के विरोध में हिंदूओं की याचिका प्रस्तुत की गयी थी। 'ए कॉन्फ्रेंस बिटवीन एन एडवोकेट फॉर एण्ड एन अपोनोन्ट दू दि प्रैक्टिस आफ बर्निंग विडोज़

अलाइव।" इस पुस्तक के कारण राम मोहर राय पर हिंदू भड़क गए और 128 पड़ितो ने घोषणा पत्र में राय की दलिलों को गलत साबित किया और इसलिए उन्हें हिंदू विचारधारा का प्रतिनिधि नहीं मानना चाहिए एसा एक पत्र प्रस्तुत किया है।

दूसरी चुनौति स्त्री शिक्षा थी। ईसाई मिशनरियों व्दारा 1810 में पहली महिला पाठशाला की शुरुवात हुई है। '1827 तक मिशनरियों व्दारा हुगली जिले में 12 कन्या पाठशालाएं चलायी जाने लगीं।' (9) मिशनरी स्कूलों व्दारा ईसाईयत फैलने के डर से बंगाल में हिंदू एवं ब्राह्मण कन्या पाठशालाएं खोली गयी थीं। आंदोलन चलाए घए थे। 'गृह शिक्षा' नाम से आंदलोन की शुरुआत अंग्रेज़, स्काटलैंट तथा उत्तरी अमेरिकी मशनरियों व्दारा की गई हैं। 'स्त्री शिक्षा आंदोलन का एक असर तो यह हुआ कि स्त्रियों के मनोंरजन के लोकप्रिय तरिकों को हाशिए पर लाया गया तथा उसके पात्रों को रोज़गार के दूसरे क्षेत्रों में धकेल दिया गया। इस प्रकार 'स्त्रियों की आवाज़' की अभिव्यक्ति के परंपरागत दायरे सीमीत हो गए। ईश्वरचंद्र विद्यासागर में 1850 में विधवा पुनर्विवाह पर लगे प्रतिबंध को समाप्त करने के लिए अभियान चलाया और उन्होंने बांग्ला में एक पुस्तिका प्रकाशित की जिसमें कहा गया कि विधवा पुनर्विवाह शास्त्र सम्मत है। उन्होंने इस विषय पर हिंदू पीड़ित के साथ संस्कृत में शास्त्र अध्ययन भी किया हैं। 1856 में कानून लागू हुआ था। '1890 के दशक में वे तथ्य सामने आया है कि 'विधवा पुनर्विवाह कानून बनने के बाद विगत 40 वर्षों में कुल सौ के आस पास विधवा पुनर्विवाह हुए।' 'स्वर्णकुमारी देवी ने 1886 में 'साखी समिति' नामक एक महिला संगठन शुरू किया जिसका उद्देश्य विधवाओं को पढ़ाने के लिए प्रशिक्षण देना था ताकि वे आत्मनिर्भर होकर शिक्षा के प्रसार में सहायता कर सकें। उन्हीं वर्षों में उन्होंने महिला

शिल्प मेला आयोजित करना शुरू किया जिसमें भारतीय स्त्रियों द्वारा तैयार... हस्तशिल्प की बिक्री की गई : इसका उद्देश्य आंशिक तौर पर साखी समिति के लिए धन संग्रह करना तथा आंशिकतौर पर स्वदेशी एवं आत्मशक्ति के संबल के रूप में भारतीय कुटीर उद्योगों का संवर्द्धन करना था।' 1905 में 120 ब्राह्मण स्त्रियों ने 'स्वदेश के प्रश्न' पर अपने अपने विचार व्यक्त किए और तय किया कि ;आज के बाद वे काँच की चूड़ियाँ नहीं खरीदेंगी, खनिज तेल से छपे छींट के कपड़े तथा बच्चों के खिलौनों समेत यूरोप में निर्मित कोई भी वस्तु नहीं खरीदेंगी।' इस समय महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव दिखाई देता है। वे क्रांतिकारी के रूप में सामने आती हैं, समाज सुधार आंदोलनों में भाग लेती हैं। एक विद्रोही स्वर यहाँ पर दिखाई देता है।

कन्या महाविद्यालय की अनेक पूर्व छात्राएं राष्ट्रवादी कार्यकर्ता बन गईं जिनमें मेरठ की पर्वती देवी हसन के नागरिक अवज्ञा आंदोलन में जेल जाने वाली प्रथम महिला थी। ' वे घर गृहस्थी भी संभालती थी और अपनी समाज की आजादी के भी लड़ती थी। 'मितिहरवा', 'बरहरवा' तथा मधुबन जैसे शहरों में स्कूल तथा आश्रम खोले गए जिनमें स्त्रियों को पढ़ने लिखने एवं सुत कटाने का प्रशिक्षण दिया जाता था। 1919 के रौलट कानून बनाने के बाद स्त्रिया बहुसंख्या में इस आंदोलन में जुड़ी । इस आंदोलन के बाद स्कूलों में एक आत्मविश्वास सर निर्मित हुआ, विद्रोही भावना उनके मन पनपने लगी थी। अंग्रेजों के प्रति उनका आक्रोश साफ़ दिखाई दे रहा था। इस दौर में बड़े पैमाने में क्रांतिकारियों को गिरफ़्तार करते थे, इस कारण सत्याग्रह में पुरुष को न लेते हुए 'सरोजिनी नायडू, लाडो रानी जुत्शी, कमला नेहरू, हंसा मेहता, सत्यवती, अवंतिकाबाई गोखले, पार्वतीबाई, रुक्मिणी लक्ष्मीपति, पेरिन एवं गोशीबेन कैप्टेन, लीलावती मुंशी, दुर्गाबाई

देशमुख तथा कमला देवी चट्टोपाध्याय जैसी कई महिलाओं को डिक्टेटर के रूप में काम करने के लिए चुना गया।' यहाँ बड़े पैमाने में स्त्री सहभागिता मिलती हैं। 'भारतीय स्वाधीनता की से संघर्ष में पहली बार भारतीय स्त्रियों की व्यापक सहभागिता के रूप में याद किया जाता है। '1930 में राष्ट्रीय वादी आंदोलन में एक अच्छा काम ये हुआ कि उच्च वर्गीय स्त्रियों का प्रभाव खत्म हो गया। 1943 में बंगाल में अकाल कट गया कारण कालाबाजारी तथा खाद्यान्न भंडार की प्रवृधि थी। इस कारण स्त्रियों में आत्मरक्षा के प्रति सक्षत चित्रण मिलता है। 'स्वतंत्र भारत में 1955 में हिंदू विवाह अधिनियम पारित किया गया जिसमें स्त्रियों को पुरुषों के समान अधिकार दिए गए। 1956 में हिंदू उत्तराधिकार अधिनियम, कन्याओं का अनैतिक व्यापार निरोधक अधिनियम, 1961 में दहेज निरोधक अधिनियम पारित किए गए।' सन 1973 में शराब विरोधी आंदोलन की शुरुआत हुई। इस आंदोलन में महिलाओं ने भाग लिया था। थाने में जाकर महिलाओं ने भट्टी बंद करने की बात कही और गावों में जाकर शराब की भट्टी तहस नहस कर दी थी। 1976 में बाल विवाह की आयु 15से हटाकर 18 कर दी गई है। 'भारतीय दंड संहिता की धारा 304 के अंतर्गत शादी के 7 वर्ष की अवधि के भीतर किसी महिला की अप्राकृतिक मृत्यु को 'दहेज हत्या' के दायरे में रखा गया है जिसके लिए दोषी को आजीवन सजा तक का प्रावधान है। भारतीय दंड संहिता की धारा 314 के अंतर्गत यह प्रावधान है कि किसी महिला की इच्छा के विरुद्ध यदि कोई उसका गर्भपात कराता है, तो उसे आजीवन कारावास तक की सजा हो सकती है। भारतीय दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 125 के अंतर्गत कोई भी महिला किसी भी स्थिति में अपने तथा अपने पुत्र/पुत्री के भरण-पोषण के लिए पति के विरुद्ध कोर्ट में केस दायर कर सकती है।

निष्कर्ष

स्त्री- पुरुष संबंध आदिकाल से ही बदलते रहे हैं। हालांकि आदिकाल की प्राप्त सामग्री से पता चलता है कि इस काल में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव नहीं था। ऋग्वेद में पिता को घर मुखिया और माता को गृहस्वामिनी माना। वीर पुत्रों को जन्म देने वाली माता को गौरवपूर्ण माना है। पत्नी और पुत्र के बिना पुरुष के को अपूर्ण माना है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक हर क्षेत्र में उनका योगदान रहा है। उत्तर वैदिक काल में स्थिति में बदलाव दिखाई देता है। कहीं न कहीं पुरुष वर्चस्व हावी होने लगी था। मनुस्मृति लिखी गयी जहाँ स्त्रियों के कौमार्य और विवाहित स्त्री की शुद्धता पर ज़ोर दिया था। सूत्र महाकाव्य युग में स्त्री को भोग विलास की वस्तु माना जाता था। बहुविवाह का प्रचलन था। उच्च कुल के पुरुष बहु पत्नियां रखते थे। धर्म, राजनीति, समाज से उन्हें दूर रखा जाता था। बौद्ध काल में भिक्षुणी को आदर के बदले व्याभिचारी के रूप में देखते थे। मौर्यकाल में स्त्रियों के प्रति क्रूर व्यवस्था दिखाई गयी है। बाल विवाह की प्रथा थी और इस कारण उन्हें शिक्षा से वंचित रहना पड़ता था। शक कुशक युग में विधवाओं की स्थिति दयनीय थी। स्त्रियों का समाज में कोई मान नहीं था। पुनः विवाह का विरोध था। गुप्तकाल में उच्च कुल की स्त्रियों का वर्णन मिलता है। संभ्रांत कुल की स्त्रियों इतिहास एवं पुराण का अध्ययन करती थी। पति की अनुपस्थिति में वह उत्सवों में भाग नहीं लेती थी, उनके उपस्थिति में ही वह साज श्रृंगार करतीं थीं। मध्यकाल आक्रमणकारियों का समय था। धर्म के नाम पर स्त्रियों का शोषण होता था। शिक्षा की कोई सुविधा नहीं थी उन पर कड़ी निगरानी रखी जाती थी ताकि कोई शिक्षा

ग्रहण न कर सके परंतु उच्च कुल की स्त्रियों को शिक्षा का अधिकार था। स्त्रियों का अपहरण बलात्कार युद्ध होने लगे थे। आधुनिक काल में स्त्रियों के प्रति हो रहे शोषण के कारण कई आंदोलन हुए हैं। सावित्रीबाई फुले और ज्योतिबा फुले ने गरीब और निम्न वर्गीय स्त्रियों के लिये स्कूल खोले हैं। मशीनरी ने 1810 को शिक्षा के दरवाजे खोले थे। 8081 में बाल मजदूरी पर अधिनियम बनाए गए और बाल विवाह पर भी रोक लगेंगी गयी थी। इस दौर में पता चला है कि स्त्री सुरक्षा के लिए कई अधिनियम संविधान ने बनाएँ गए है।

संदर्भ सूची

1. भारतीय विवाह संस्था का इतिहास, विश्वनाथ काशीनाथ राजवाडेनवोदय सेल्स दिल्ली संस्करण 2005

2. नारी शोषण:समस्या एवं समाधान, डॉ राजकुमार अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2003 पृ 1

3. वही पृ 4

4. वही पृ 4

5. वही पृ 7

6. स्त्री संरष् का इतिहास, राधा कुमार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002 पृ 27

7. स्त्री सशक्तिकरण प्रो सरिता वाशिष्ठ, कल्पना प्रकाशन,, 2010

8. मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थान:एक अध्ययन, कुमार डॉ सुनील, IJCRT 2016

9. मुग़ल काल में शाही महिलाओं की शैक्षिक स्थिति, पवन कुमार, International Journal Of Research 2018

10. महिला एवं कानून, मेहता चेतन, आशीष पब्लिशिग हाउस, दिल्ली 1996

11. प्रारंभ से मध्यकाल तक स्त्रियों की दश, प्रवीन कुमा, सविता देवी, कृष्णा देवी, पंकज, International Journal Of Applied Research 2023

अध्याय 4

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री- पुरुष संबंध

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री-पुरुष संबंध

स्त्री-पुरुष पारिवारिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं। वे समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखते है। उनका समाज के प्रति एक महत्वपूर्ण योगदान रहा हैं। जन्म से लेकर मृत्यु तक स्त्री और पुरुष किसी न किसी संबंध में बंधे रहे हैं। पुरुष की कल्पना से ही स्त्री मन प्रफुलित हो उठता है और स्त्री का सहवास पुरुष के लिए सुखद अनुभुति प्रधान करता है। स्त्री को जहां एक ओर सौंदर्य, मधुरता, त्याग का प्रतीक माना है वही पुरुष को शौर्य, कठोरता एवं शक्ति का प्रतीक माना है। उनके आपसी सहयोग, सहभाव,स्नेह व प्रेम से समाज का विकास होता है। परंतु जहां अंहकार उत्पन्न होता है वहां स्त्री-पुरुष संबंध में अस्थिरता दिखायी देती है। आधुनिक समाज में स्त्री-पुरुष संबंध के मायने बदल गए हैं। एक नये प्रकार की उथल- पुथल चल रही है।

मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों में समाज व्दारा स्वीकृत एवं अस्वीकृत नैतिक व अनैतिक संबंधों का चित्रण किया है। उनके साहित्य में दांपत्य संबंध ,दांपत्येतर संबंध, पिता –बेटा, मॉ-बेटा , नौकर – मालिक संबंधों के अलग पहलुओं का चित्रण किया गया है। उनके कहानी साहित्य में भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत होता है।

मृदुला गर्ग की कुल 87 कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। जिनमें से 14 कहानियों में स्त्री पुरुष संबंध का चित्रण मिलता है। उन 14 कहानियों के कथानक निम्नलिखित हैं:

रुकावट

'रुकावट' कहानी की नायिका 'रीता' अपने प्रेमी मदन के साथ होटल के कमरे में है। वह अपने पति को धोख़ा दे रही थी। रीता मदन से उसके प्रियसियों के बारे में पूहचती है, जब मदन अपनी प्रियसियों का वर्णन करता है।तब रीता को एहसास होता है कि जिसे वह प्रेम समझती थी, वह केवल फरेब है, शरीर का संबंध है और उसमें प्यार की गुंजाईश नहीं है। रीता को अपने पति की याद आती है। हर कार्य में रीता के साथ होता है। रीता को उस होटल से जाना था और मदन से फिर कभी मिलने की खाइश नही थी। लेकिन होता इसके विपरीत है। अंत में उसे दोबारा मिलने का वादा करती है।

वितृष्णा

दिनेश दफ्तर से अपने घर की ओर लौट रहा था। रास्ते में वह मन ही मन में सोच रहा था कि अब रिटायर हो चुका सारा वक्त शालिनी को दूंगा क्योंकि वो काम के सिलसिले में शालिनी को वक्त नहीं दे पाता था। पहले के दिनों में शालिनी उसे हर रोज़ समय निकालने के लिए कहती थी परंतु काम की वजह से वह उसे वक्त नहीं दे पाता था। आज वह शालिनी से ढेर सारी बातें करना चाहता है। उससे कहना चाहता था कि तुम मुझे हर समय वक्त निकालने की बात कर रही थी ना अब मेरा सारा वक्त तुम्हारा है। घर पहुँचकर शालीन से बात करने की कोशिश करता है तो शालिनी उससे बात नहीं करती । चुपचाप अपना खाना खाती है। उसके आने से भी उसके चेहरे पर कोई हाव भाव नहीं रहता। मूर्ति की तरह अपना काम करती रहती है। उसे परोस कर वह खुद अपने कमरे में चली जाती है। दिनेश के मन की सारी बातें वह नहीं कर पाता। वह बात करने की कोशिश भी करे तो सुनने के लिए वहाँ शालिनी नहीं होती है। दिनेश शालिनी के साथ बैठकर

खाना खाना चाहते हैं, परंतु उसके आने से पहले ही शलिनी खा चुकी होती है। शालिनी की बहन जब आती है वे दोनों उसके पहले ही खाना खा चुके होते हैं और शालिनी मंगला को लेकर कमरे में चली जाती है और दिनेश अकेला रह जाता है। वह सोच के आया था कि शालिनी से किसी भी हालत में बात करेगा चाहे वो क्रोधित क्यों न हो परंतु जब वह आता है तो इसके विपरीत होता है।

मेरा

'मेरा' कहानी की शुरुआत कुछ इस प्रकार है: मीता और महेंद्र स्कूटर से अस्पताल जा रहे है। मीता गर्भ से थी लेकिन महेंद्र अपने सपनों के कारण वह बच्चा नहीं चाहता था। इसलिए मिता अपने मन को मारकर गर्भपात के लिए उसके साथ चली जाती है। मिता और महेंद्र का प्रेम विवाह था। मीता ढ़ाई साल से 'सेतु ट्रैवल्स कंपनी' में टाइपिस्ट के तौर पर काम करती है वहीं उसकी मुलाकात महेंद्र से हुई थी। महेंद्र 'सरवरिया एंड को'. में 2 साल से काम करता था। फाइट की टिकट निकालने आया महेंद्र को मिता भा गई थी और इसके साथ ही उसके मिलने जुलने का सिलसिला शुरू हो गया था। दिन मौका पाते ही महेंद्र ने मिता से शादी की बात छेड़ दी और वे दोनों ने शादी की। आज मिता, माँ बनने की खबर महेंद्र को सुना रही थी परन्तु उसके चेहरे पर खुशी के भाव के बजाए क्रोध था। इसलिए था क्योंकि उसे लगता था कि उन दोनों के वेतन से उनके बच्चे की देखभाल नहीं हो सकती और दूसरी महत्वपूर्ण वजह थी कि महेंद्र को अमेरिका जाना था इसलिए उसने स्टूडेंट वीज़ा भी लिया था। महेंद्र की इस रवैये से मिता नाखुश थी। फिर भी उसके लिए वह गर्भपात के लिए तैयार हो गई थी। वे दोनों अस्पताल में पहुँच जाते हैं डॉक्टर

की बातों से मीना के मन में एक आत्मविश्वास निर्माण होता है और वह निर्णय लेती है कि इस बच्चे को वह जन्म देगी। वह गर्भपात नहीं करेगी। नि:सहाय महेंद्र लाचार हो जाता है।

'लिली ऑफ द वेली'

'लिली ऑफ द वैली' कहानी है निशी, मणि, विभा और कथावाचक की। 'मैं' इस कहानी की आवाज़ है यानी 'मैं' ये कहानी सुनाती है। वे चारों कॉलेज की सहेलियां हैं और विभाग के शादी के मौके पर वहाँ आई हैं। उन चारो सहेलियों में आ सबसे खूबसूरत थी। निशि का प्रेम में विश्वास था। वह मानती थी दो आत्माओं के संबंध को प्रेम कहते हैं ओर वो आत्मा की तरह अनेश्वर होती है। उसका कहना था आदर्श अनेश्वर प्रेम होने पर भी वह विवाह करेगी। जब निशी शादी के लिए आई तो सब उसके पति से मिलने के लिए आतुर थे। लेकिन उसके पति को शराब की लत लगी थी और वह दिन रात शराब भी पीता था। उसे जुए के भी आदत थी और इस कारण निशि के सारे गहने कपड़े व हार चुका था निशी को अपने सहेली की शादी में पहनने के लिए भी कोई साड़ियां नहीं बची थीं। अपनी सहेलियों को असलियत न बताते हुए वह अपने पति की तारीफ ही करती है और उसको एक बहुत अच्छा इनसान बताने की कोशिश करती है।

दो एक फूल

डॉक्टर मालती शर्मा कर्नाटक में नयी आई थी। शांतम्मा उसके यहाँ काम करती थी। उसे कर्नाटक की कारीगरी बखूबी करने आती थी परन्तु उसका मोल उसे पता नहीं था उसे लगता था वह खाली

वक्त में केवल एक फूल निकाल रही है। मालती के यहाँ वह झाड़ू पोछे का काम करती थी। उसने डॉ मालती को बताया कि उसका एक बार गर्भपात हो चुका है और एक बार बच्चा हो कर करीब एक साल में ही उसकी मृत्यु हो गई थी। डॉक्टर होने के नाते मालती को लगा कि ये सिफलिस की बिमारी हो सकती है इसलिए उसने उसे और उसके पति को जांच करने के लिए अस्पताल बुलाया। मालती ने उन दोनों का इलाज किया पर वे जानती है कि सिफिलिस की बिमारी खतरनाक नहीं है अगर वे दोबारा न हो परन्तु डॉक्टर मालती का डर सच साबित हो गया था। शांतम्मा अपने तीसरे बच्चे को जन्म देने वाली थी। परन्तु ये हो न सका क्योंकि उसके पति ने उसे फिर से सिफिलिस की बिमारी से ग्रस्त कर दिया।

उसकी करार

'उसकी करार' कहानी में सुमित की पत्नी सुधा को दिल में ट्यूबर है। उसके पास कुछ ही महीने हैं परंतु उसने सुधा को यह बात नहीं बताई थी। दूसरी ओर सुधार अपने जीने की चाह में है, सोचती है कि एक दिन सब ठीक होने वाला है। वह हर वक्त उसे आश्वासन देता था क्योंकि उसे सुधा से प्यार था परंतु अब वह सुधा की इस हालत से तंग आ गया था। एक ही रूटीन था। घर पर चैन से सास नहीं ले सकता था। कुछ मदद हो इसलिए उसने अपनी माँ को बुलाया था ताकि वह सुधा की देखभाल कर सके। माँ को सुधा भाती नहीं थी। वह सुधा के रहते ही अपने बेटे की दूसरी शादी की तैयारी करती है। बिना सुधा की परवाह किए। दूसरी लड़की के आने के बाद सुमित अपनी पत्नी को भूल जाता है।वह सुधा से प्यार करने का दावा करता था पर अब दूसरी लड़की आने के बाद उसपर आसक्त हो जाता है।

अगर यों होता

जिम और मधुर एक दूसरे से प्यार करते है। वे दोनों ड्रामा कंपनी में मिले थे। कॉफी शॉप में जिम मधुर को अपना प्यार कबूल करता है परंतु मधुर बात को टाल देती है। जिम मधुर को घर छोड़ने जाता है तभी मधुर उस अपने दिल की बात कह देती है, लेकिन उसे अपने पति और बच्चे को छोड़ना नहीं था। इसलिए वे दोनों फिर कभी न मिलने का वादा करते है।

लौटना और लौटना

'लौटना और लौटना' कहानी बूढ़े माता-पिता की है। उनका बेटा 5 साल से अमेरिका में रहता था। कुछ महीनों के लिए वह वापस भारत आता है। उसके माता पिता की परवाह किये बगैर अमेरिका में आनंद से रहता है और यहां उसके माता पिता बहुत ही दयनीय अवस्था में है। वे किराए के घर में रहते हैं और उनके पास किराए का पैसा भी देने के लिए नहीं रहता। जब वह उनके घर आता है तो वहाँ के रहन सहन पर बहुत गलतियाँ निकालता है। पर अपने माता पिता को एक अच्छा घर या कुछ पैसों की मदद करने का उसका कोई लक्ष्य नहीं है। उसका मानना है कि शादी के लिए अमेरिकी महिला योग्य नहीं है, शादी के लिए भारतीय महिला ही उचित है। इसलिए वह शादी करने के लिए भारत आया है। उसके पिताजी की एक ज़मीन थी, उनका सपना था कि उस ज़मीन पर एक घर बनाया जाए ताकि वो किसी भी तकलीफ के बगैर वहाँ रह सके परन्तु बेटा ने वहाँ पर मकान बनवाकर, उसे किराये पर चढ़ाकर, उन पैसों को अपने ही खाते में जमा कर लेता है और अमेरिका जाता है। उसके माता पिता के सपने सपने ही रह जाते हैं।

‘डैफोडिल जल रहे है

'डैफोडिल जल रहे है' कहानी में विना अपने पति के साथ हनीमून के लिए कश्मीर आई थी। वह अपने दंपत्य जीवन से खुश नहीं है। उसे लगता है कि उसके ज़िंदगी में कोई थ्रिल नहीं है। उसका पति उसे चुंबन लेने की कोशिश में उसे पता चलता है कि विना को बुख़ार है।उसका पति उसकी परवाह करने के बजाय उसे भला बुरा कहता है। डॉ दस्तूर और मिसिस दस्तूर उन्हें मिले हैं। मिसिस दस्तूर और विना की अच्छी दोस्ती होती है। एक दिन विना को वे सब लोग बर्फिलि पहाड़ी पर ले जाते है। वही मिसिस दस्तूर आत्महत्या करती है। मिसिस दस्तूर विना के नाम एक चिट्टी छोड़ देती है। उस चिट्टी में कहती है कि हर औरत को समझौता करना ही होता है। एक दिन तुम भी इस परिस्थिति से गुज़रोगी।

'कितनी कैंदे’

'कितनी कैंदे’ कहानी में मीना और मनोज कोयना बांध की लिफ्ट में फ़स जाते है। मीना को हिस्टीरिया की बीमारी होने के कारण उसे घुटन महसूस होती है। इस पर मनोज उसे ठीक करने के लिए थपाद जड़ाता है। मीना को एहसास हो जाता है कि वे दोनों अब नहीं बचेंगे और वह मनोज को अपने अतीत का घिनौंना सच बताती है। कॉलेज के दिनों में मीना को नशे की आदत हो गई थी। हर रोज़ घूमने जाना उनके ग्रुप की आदत बन चुकी थी। उसके माता- पिता भी उसके बाहर

जाने की बात के साथ थे क्योंकि उनका एक ही उद्देश था कि मीना की शादी। मीना अमीर लड़को के साथ जाएंगी और किसी को फसा लेंगी तो उनके लिए अच्छा होगा ऐसा उनका मानना था। एक दिन मीना अपने दोस्तों के साथ जुहू बीच पे घूमने जाती है। पहले से ही उसने नशा किया था और एक लड़के के कहने पर गोली खा ली थी। इससे वह सुध बुध सब को बैठी और इसका फ़ायदा उन लड़को ने उठाया, उसके साथ बलत्कार किया गया था। इस बात की खबर माता – पिता को पता चलने के बाद उसको खूब पिटा गया। और तभी मनोज से शादी का प्रस्ताव आया और तुरंत उनकी शादी हो गयी। उधर मनोज की काग्ता है अब बचने का कोई आसार नहीं है इस क्षण को जीते है और वह मीना के करीब जाता है और तभी लिफ्ट चलने लगती है । वे दोनों अपने आप को समालते है। लिफ्ट से ज़िंदा बाहर निकलने की वजह से और अपने अतीत की कैंदे से मुक्त होने के कारण मीना खुश थी वही मनोज को चिंता थी कि मीना की सच्चाई जानने के बाद उसके साथ ज़िंदगी कैसे बिताएगा।

अवकाश

' अवकाश' कहानी में करुणा पति महेश से तलाक़ चाहती है। दो साल से वह यह बात अपने पति को कहना चाहती है परंतु कह नहीं पाती है। आज उसने महेश को समीर के बारे में सबकुछ कह डाला। महेश बात को गंभीरता से लेने के बजाय मीना को सलाह देता है कि उसके माँ के घर में कुछ दिन ठहेर लो। और फिर किसी निष्कर्ष पर आना। वह उसके प्यार को केवल आकर्षण समझता है।यह रिश्ते केवल एक गलती है, ऐसा कहता है। करुणा को समीर से सच्चा प्यार है

वह कोई आकर्षण नहीं है। महेश कुछ दिनों बाद करुणा को मिलने जाता है और कहे अनकहे में उन दोनों में संबंध स्थापित होता है। इस वाक् के कारण करुणा महेश से दो महीने के बजाय परंतु तलाक़ की मांग करती है।

' उसका विद्रोह्'

' वह' अपनी मेमसहब से नाराज़ है क्योंकि वह उसकी हर बात पर खामियां निकलती है। उसके गांव से चिट्टी आई है उस में उसके रिश्ते की बात कही है। इसलिए ' वह' खुश है। उसने चिट्टी में कहलवा भेजा था कि वह एक मेमसहब के बड़े घर में काम करता है, और रहने के लिए कमरा है, तीन वक्त का खाना है। उपर से तनखा मिलती है। इसलिए वह मेमसहब की गुस्ताकियों को माफ़ करता आ रहा है। उस दिन उसने बैठक में सुंदर शिव पार्वती की मूर्ति लगवाई थी लेकिन मेमसहब ने उसे तोड़ दि और उसपर बहुत गुसा किया था। मेमसहब की सहेलियाँ आई थी उनके लिए चाय बनाई ग़लती से एक सहेली पर चाय क्या गिरी मेमसहब उसपर बरास पड़ी और तब उसने रस्सी पर सुख रहे कपड़े को उतरकर नाल चालू करके ज़ोर ज़ोर से गाने लगा ताकि उपर बैठी मेमसहब से लेकर पड़ोसी तक आवाज़ पहुँच जाए।

' मौत में मदद''

' बुद्धन' गार्डेन साफ़ करने का काम करता है। एक दिन बुद्धन मेमसहब के पास पैसे मांगने आया क्योंकि उसका बेटा बीमार था। उसकी मेमसहब के पास पैसे न होने के कारण वह अपने पति से पैसे मांगती है परंतु उसका पति यह कहकर ठुकरा देता है कि वह पैसों के लिए नाटक कर रहा है। अगर सच में बीमार है तो उसे सरकारी अस्पताल में भर्ती करना चाहिए, उसके लिए वहाँ मुफ्त

इलाज होता है। मेमसहब अपनी पर्स में से कुछ पैसे और दवाई देती है। उसके पास केवल नौ रुपए ही थे। वह भी बुद्धन को दे देती है। दूसरी रात बुद्धन फिर आता है पर इस बार वह मौत की खबर लेकर आया था। अपने बेटे की मौत की ख़बर। इस बार उसका पति पैसे देता है और कहता है मौत में मदद करनी चाहिए। इस घटना के बाद लेखिका (मेमसहब) पर एक प्रभाव छोड़ जाता है। वह इस दुख से उभर नहीं पाती है।

स्त्री- पुरुष संबंध का विश्लेषण निम्नलिखित हैं:

4.1 **पति-पत्नी**

पति-पत्नी का संबंध एक अटूट बंधन हैं। यह संबंध दो लोगों के बीच आपसी प्यार, विश्वास, त्याग, समझौते का प्रतीक हैं। भरोसा इस रिश्ते की नीव होती है। भरोसे की नीव टूट जाए तो इन संबंधों में टकराव आता हैं। जीवन के इस सफर में एक दूसरे का साथ होना आवश्यक है। पति-पत्नी एक दूसरे के पूरक है , परंतु जहां बात समझौते की आती वहां स्त्री से ही अपेक्षा की जाती है। यह बात साहित्य में भी झलकती है।

मृदुला गर्ग ने अपने साहित्य में अलग दृष्टिकोण लाने का प्रयास किया है। पति-पत्नी के अलग स्वरुप को रेखाकिंत किया है। उनकी स्त्री पात्र आत्मनिर्भर है। इस पितृसत्तात्मक समाज के ख़िलाफ आवाज़ उठाती है, प्रतिरोध करती हैं।

'कितने कैंदे' कहानी मध्यवर्गीय परिवार की है। मीना अपने अतीत से उभर नहीं पायी है। उसका पति हमेशा उसके क़रीब आने की कोशिश करता है परंतु अपने अतीत के कारण वह उसे सुख नहीं दे पाती है। एक दिन कोयना बाँध की लिफ्ट में फँस जाते है। तब मीना अपने अतीत के पन्ने खोल देती है। मनोज कहता है कि "तो यह सच है, हर औरत बलात्कार चाहती है ?"(1) मीना प्रतिउत्तर देती है "नहीं, हर औरत पर बलात्कार होता ज़रूर है पर चाहती नहीं। चाहता तो पुरुष भी नहीं। दोनों हृदय की गहराई से प्यार चाहते हैं, पर वह मिलना क्या इतना आसान है ? ज्यादातर लोगों के हिस्से यही आता है जिसे बलात्कार कहना उचित है।"(2) मनोज हर वक्त उसके क़रीब आना चाहता है सोचता है बचने का कोई आसान नहीं है तो नफ़रत के बजाय प्यार करना अच्छा

है परंतु वे दोंनो बच जाते है मीना अपनी ज़िदगी की कैंद से आज़ाद होने के कारण खुश है वही दूसरी तरफ मनोज सोचता है कि “यहाँ तक तो ठीक है, पर अब सवाल मौत नहीं, जिन्दगी का है। क्या मैं इसकी पिछली ज़िन्दगी के शिकंजों से बरी रह सकूँगा? इस औरत के साथ जी सकूँगा ?”(3) मनोज की सोच पितृसत्तात्मक समाज की सोच को दर्शाती है।

‘एक चीख़ का इंतज़ार’ कहानी प्रसवपीड़ा के दृश्य को व्यक्त करता है। सुरेश अपनी पत्नी की वेदना को नाटक का नाम देता और कहता है कि “उफ भाभी, तुम बहुत डरपोक हो। अभी क्लाइमेक्स कहाँ आया? मालूम है जब बेबी हुई थी, माँ पूरे घंटे भर चीखती रही थीं। मैं दरवाजे के बाहर खड़ा था। अभी एक चीख़ भी नहीं निकली और तुम इतना घबरा गई।”(4) उसका आपरेशन भी करने से इंकार करता है। लाख समझाने पर मानता है। पत्नी की वेदना में सुरेश कहता है “भाभी, माँ कहा करती हैं भगवान की कुदरत है कि औरत को जितना कष्ट हो, उसे उतना ही मोह बच्चे से होता है।”(5) पुरुष की मानसिकता पर प्रहार किया है।

‘डैफोडल जल रहे है’ दो स्त्रीयों की भिन्न परिस्थियों का चित्रण हैं। एक तरफ वीना है जिसे अपने शादी में कोई थ्रिल, साहासिकता नज़र नहीं आती है। शादी के बाद हनीमुन के लिए कश्मीर घूमने आए है परंतु वीना के मन में कोई उत्साह नहीं है। कश्मीर में वीना बीमार होती है। वहां उनकी मुलाकत डॉ. दस्तुर और मिसेस दस्तुर से होती हैं। मिसेस दस्तुर और वीना के बीच गहरा रिश्ता बन जाता है। जीवन के प्रति दो भिन्न दृष्टिकोण है जहां मिसेस दस्तुर कहती है कि “तुम यह मत समझ लेना कि मौत खूबसूरत ही होती है। दंरअसल खूबसूरत सिर्फ ज़िंदगी होती है पर मौत उसका हिस्साज़रुर बन सकती है।”(6) मिसेस दस्तुर ल्युकेमिया का शिखार थी और अपने दिन गिन

रही है, अपने पति को तकलिफ न हो इसलिए बर्फीली पहाड़ी से कुदकर अपनी जान देती है। इस कहानी में पुरुष के स्वार्थी चरित्र और स्त्री के करुण भाव को रेखाकिंत किया है।

'वितृष्णा' कहानी एसी पति पत्नी की है, शादी के बरसों बाद भी अपने दाम्पत्य जीवन से खुश नहीं है। शालिनी को अपने पति की अनुपस्थिति की आदत हो चुकी थी। हमेशा दिनेश केवल काम में मशगूल रहने की वजह से उसका ध्यान शालिनी पर नहीं जाता है। इस वजह से शालिनी को घर पर अकेली रहने की आदत हो चुकी है। अपने ही घर में दोनों अजनबी बन चूके है। दिनेश रिटायर हो चुका है और अपना सारा वक्त वह शालिनी को देना चाहता था लेकिन शालिनी को उसके बगैर रहने की आदत होने लगी और इस कारण वह उसके साथ बात नहीं करती, खाना भी साथ में नहीं खाती है। दिनेश की बैठक में छोड़कर स्वतः अंदर कमरे में चली जाती है दोनों के बीच कहे अनकहे एक अबोल या दीवार स्थापित हो जाती है। लेखिका लिखती है- "दिनेश सामने रहते हैं तो शालिनी का चेहरा चेहरा नहीं रहता सपाट पीठ बन जाती है।"

इस कहानी में वृद्धावस्था में पति पत्नी की दूरी को व्यक्त किया गया है। डॉक्टर वैशाली देशपांडे लिखती हैं "मृदुला गर्ग ने वितृष्णा कहानी के माध्यम से पति पत्नी के संबंधों में आए ठहराव को अंकित किया है।"

भारतीय संविधान के अनुसार केवल माँ की अनुमति से ही बच्चा गिरा सकते है लेकिन पुरुष प्रधान समाज उसे नज़र अंदाज करते है और अपनी ही चलते है। जैसी 'मेरा' कहानी में नायिका 'मिता' को बच्चे को जन्म था परंतु पति के सपनों के लिए न चाहते हुए वह गर्भपात करने के लिए तयार हो जाती है। दूसरी ओर उसका पति खुश होने के बजाय उसे कोस्ट है। परंतु जब डॉ से

बातचीत होती है तब उसे अपने अधिकारों का ज्ञात होता है। वह बच्चे को जन्म देने का निर्णय करती है। इस कहानी में माँ मन की व्यथा प्रस्तुत की है। भारतीय संविधान में महिला सुरक्षा के लिए कई अधिनियम बनाये है परंतु ज्यादातर महिलाओं को इसका पता नहीं है। इन नियमों के कारण महिलाओं पर हो रहे शोषण कही न कही कम होंगे। महिलाओं को इन अधिनियमों का ज्ञान होना अनिवार्य है। तभी कही न कही पुरुष वर्चस्व काम हो सकता है।

मृदुला गर्ग की कहानियों में परंपरागत स्त्रियां दिखाई देती है। जैसे उनकी कहानी 'लिली ऑफ़ द वैली' निशि की कहानी है। इस कहानी में चार सहेलियां है, जिसमें निशि इस कहानी की नायिका है। सपनों का राजकुमार, प्रेम विवाह की चाह रखने वाली निशि के जीवन में एक नशेड़ी आ जाता है। पति की बुरी आदत के कारण निशि को अपने गहने, कपड़े सब कुछ बेचना पड़ता है। उसकी स्थिति दैनिया हो जाती है। अपने दोस्त की शादी में आई निशि पति से कहती है "तुम जानते हो मेरी शादी की यही दो-चार साड़ियां बची है और जेवर कोई नहीं।" इस कहानी में पति और अपना आत्म सम्मान बचाने के लिए नीशी अपनी सहेलियों से बड़ा चड़ा कर बातें करती है, उनसे झूठ कहती है। परंपरागत धारणा दिखाई देती है जहां निशी अपने पति की कमतरता के बावजूद उसे तलाक न लेकर उसके साथ ही आजीवन जिंदगी बिताती है।

मृदुला गर्ग की कहानियों में आधुनिक स्त्री पुरुष के साथ-साथ देहाती स्त्री पुरुष संबंध पर भी बात की है। उनकी कहानियों में परंपरागत जीवन जीने वाली स्त्रियों का चित्रण है। 'दो एक फूल' ऐसी कहानी है जहां शांतम्मा को अपने पति द्वारा अत्याचार सहन करना पड़ता है शांतम्मा पारंपरिक स्त्री है पति के अत्याचार सहन कर लेती है उसका विद्रोह नहीं करती। सिफीलिस की बीमारी का

शिकार होने के कारण उसका दो बार गर्भपात हो चुका है इस बीमारी की जानकारी न होने के कारण उसका पति शांतम्मा को जिम्मेदार समझता है उसे गालीगलोछ मारपीट करता है –"चुड़ैल, अभी कितने बच्चों को खाएगी। हरामज़ादी, तेरे करम साड़े है, तेरा बदन सडा है, तेरा पाप फलता है बच्चों की देह पर हरामज़ादी उल्टा! डायन!।" इस मारपीट का विरोध शांतम्मा नहीं करती बल्कि ऐसे ही जीवन जीती है और उसे ही जीवन का सार मान लेती है शांतम्मा की यह दूसरी शादी है डॉक्टर मालती के कहने पर भी उसका विद्रोही भाव नहीं दिखाई देता वह कहती है- "पहले एक मरद था बाई। वह मेरे को छोड़ दिया तो इसको किया। यह फिर भी अच्छा है, वह तो रोज़ बाज़ार में जाता था, रोज़ दारू पी कर आता था और रोज़-रोज़ मेरे को मारता था।" यहां शांतम्मा के ज़रिए समाज की त्रासद एवं दुखत स्त्री का चित्रण किया है।

4.2 विवाहेतर संबंध

पति-पत्नी के इस संबंध में त्यागमूर्ती हमेशा से ही पत्नी ही रही है। भारत स्वतंत्रता के बाद इस दृश्य में बदलाव देखा जाता है। स्त्री अपने हक़ की माँग करती है और इस पितृसत्तात्मक सोच के खिलाफ़ प्रतिरोध भी करती है। समाज की कुरीतियों का विरोध करती नज़र आती है। आज वे घुटन भरी ज़िदगी से आज़ाद हो रहे हैं। विवाहेतर संबंध जन्म ले रहे हैं। इसके के कई कारण हैं जैसेः दांपत्य संबंध से उभ जाना या समय के साथ इस संबंध में प्रेम का अभाव मिलता हैं। कामेच्चा की असंतुष्टी भी एक कारण है।

मृदुला गर्ग की कहानियां विवाहेतर संबंध को देखने का अलग नज़रियां प्रधान करती हैं। उनकी कहानियों के माध्याम से कहने का प्रयत्न किया है कि प्यार और यौन के सहारे ही वह अपने जीवन की आज़ादी और अस्मिता का परिष्कार नहीं कर सकती है, वह उसे केवल अपने मन-मस्तिष्क के विकास और कर्म के सहारे ही मिल सकती है।

'रुकावट ' कहानी में होटल के कमरे का दृश्य है। इस कहानी में नायिका रीता विवाहीत है और वह मदन से प्रेम करती है। वे दोंनो हर रोज़ होटल में मिलते है। जब मदन अपने प्रियसीयों का ज़िक्र करता है तब रीता को एहसास होता है कि मदन केवल शारिरीक सूख के लिए उसके साथ है और उसका पति ही उसका सच है। लेखिका कहती है- "रीता को सहसा अपने पति का ख़याल आ गया। उसका स्नेही, सज्जन, संवेदनशील पति। न सही प्रणय की उत्कट लालसा, न सही श्रृंगार का मुग्ध संगीत, न सही उन्माद में लुप्त चेतना; स्नेह तो था और संवेदना और आदर। वह उसकी हर इच्छा पूरी करने के लिए तैयार रहता था। जीवन अबाध गति से चलता था। कोई संशय नहीं, अविश्वास नहीं, अशान्ति नहीं। क्या रखा था इस प्रेम सम्बन्ध में! चोरी-छिपे होटल में मिलना, मैनेजर से लेकर बैरे तक से नजरें बचाना... आज वह लिफ्ट-मैन कैसे देख रहा था उसकी तरफ़। यह अकुलाहट, ग्लानि, आत्म- छलना और... वह जरूर उसके शरीर की तुलना करता रहता होगा। उसकी देह ऐंठने लगी। अब नहीं आऊँगी, उसने निर्णय किया। सोचा, कहे, मेरे कपड़े दे दो, मुझे जाना है। पर वह तय नहीं कर पाई, ठीक किस स्वर में उन शब्दों को कहे कि वे हास्यास्पद न लगें। मन ही मन जितनी तरह उन्हें दोहराया, शब्द भद्दे और बेतुके लगे।" वह उसका

विरोध करना चाहती है परंतु कर नहीं पाती है। उसे होटल छोड़कर जाना है लेखिक जा नहीं पाती है और उसे फिर मिलने का वादा करती है।

'अवकाश' कहानी स्त्री के कश्मकश को व्यक्त करती है। करुणा अपने प्रियकर के लिए पति महेश से तलाक चाहती है। वह अपने निर्णय पर अटुट है। " केवल शरीर आकर्षण के लिए बच्चों और घर बार को छोड़ने की जरूरत नहीं है होती उस पर काबू पाने की कोशिश करनी चाहिए तुम जानती हो, मैं तुम्हें प्यार करता हूं। " लेखिका लिखती है- "पिछले दो वर्षों में ऐसे अनेक क्षण आए है जब उसने यही सोच है कि शारीरिक सुख के अलावा इसमें और कुछ नहीं है पर वे क्षण भी वह भूल नहीं पाती जब समीर के साथ रहकर लगा, शरीर कुछ नहीं है, वे मन मस्तिष्क से एक हैं ०००।" महेश उसे इस बारे में सोचने के लिए कहता है और अपने घर एक दो महीने के लिए ठहरने का सुझाव देता है परंतु करुणा ने अपना निर्णय बना लिया है।अपना मन बना लिया है।

'अगर यों होता' कहनी 'जिम' और 'मधुर' की अधूरी प्रेम कहानी का चित्रण करती है। जिम काफी शॉप में अपने प्यार का इज़रार करता है। मधुर इस बात को ताल देती है। जिम और मिता दोनों की शादी हो चुकी थी। वे दोनों ड्रामा कंपनी में मिले थे। वही से दोस्ती प्यार में तब्दील हो गयी। परंतु वे दोनों इसका ज़िक्र नहीं करते। आज उनके ड्रामा का आखरी दिन था शायद इस कारण जिम अपने दिल की बात कहता है। जिम मधुर को घर छोड़ने जाता है तभी रास्ते में मधुर उसको अपने प्यार का इज़रार करती है और इसी के साथ वचन लेती है की वे दोनों फिर कभी नहीं मिलेंगे। आंजने में भी नहीं। मधुर अपने बच्चों और पति से प्रेम करती है और उनको छोड़कर या धोका देकर वह कोई नई जिंदगी बिताना नहीं चाहती है। ' मधुर है जो अपने बच्चों के लिए प्रेम

का त्याग करती है वही दूसरी तरफ ' अवकाश' जैसी कहानी जिसमें स्त्री अपने दिल की सुनती है। लेखिका इन दोनों मानसिकता से सहमत है और दोनों को स्वीकार करती है।

4.3 माँ- बेटा

संसार में सबसे ज्यादा स्नेहा मॉ अपने बेटे से करती है ।शायद इसलिए कि सदियों से मान्यता है कि बेटा ही मां- पिता का सहारा होता है। जन्म से मृत्यु तक अपने माता-पिता की सेवा करनी होती है। आज समाज में इसके विपरीत घट रहा है। बेटा अपनी मां को वृद्ध आश्रम भेज रहा है क्योंकि उसे अपनी मॉ की वजह से बोझिलता महसुस होती है और इसके कारण वह उससे दूर हो रहा है अपना परिवार स्थापित करने के लिए अपने माता-पिता को कहीं ना कहीं वहां पीछे छोड़ रहा है।

मृदुला गर्ग की कहानी साहित्य में आधुनिक भारत का परिदृश्य है जहां बेटा केवल अपने लालच के कारण माता-पिता से रिश्ता बनाए रखा है। उनको आर्थिक रूप से कोई मदद नहीं कर रहा है । वे आर्थिक के साथ साथ मानसिक रूप से भी ग्रस्त हैं। 'लौटना और लौटना' ऐसी ही एक कहानी है जहां एक टूटते परिवार का परिवेश है। अमेरिका में 5 साल बीतने के बाद हरीश अपने घर वापस आया है परंतु केवल इस कारण कि वह एक भारतीय से ब्याह करना चाहता है। उसके माता पिता जीस हालत में रह रहे हैं इसका उसे चिंता नहीं है परंतु हर बात पर वह नुक्स निकलता है। अमेरिका से चाहे कितने भी पैसे कमा लो लेकिन उसके माता-पिता किसी भाड़े के घर में रहते हैं। जिस में किसी भी तरह की सुविधा नहीं है लेकिन उसे कोई फिक्र नहीं है। यहां तक वापस

अमेरिका जाते समय भी उनकी ज़मीन पर वह मकान बनाता है और उसे किराए पर देकर पैसे अपने खाते में जमा करने का बंदोबस्त करता है। लेखिका रहती है- ‘‘यथा समय हरीश का मनचाहा विवाह हो गया दक्षिण यात्रा संपन्न हुई और मकान भी बनाकर तैयार हो गया। पर बापूजी का अपने मकान में रहने का सपना पूरा न हो सका। जाते समय हरीश मकान किराए पर चढ गया और किराए के रुपए अपने नाम से बैंक में जमा करने का बंदोबस्त भी कर लिया।’’ आज के इस दौर में यह विडंबना दिखाई देती है जहां पुत्र केवल अपना स्वार्थ ही देखता है।

4.4 नौकर मालिक

मृदुला गर्ग की कहानियों में उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच का मतभेद दिखाई देता है। हर रोज़ के बेज़ती से परेशान नौकर के मन में ट विद्रोह की ज्वाला जलता है, उसका परिणाम दिखाई देता है। हर किसी में आत्मसम्मान होता है।

‘उसका विद्रोह’ ऐसे ही एक कहानी है। ‘ वह’ की मालिक हमेशा से ही उसे गालीगलोच या चीखती चिलाती है। हर काम में उसका नुक्स निकालती है। इस बात से परेशान होकर वह तेश में आ जाते हैं। घर के बाहर जाकर ज़ोर ज़ोर से गाने गुनगुनाता है ताकि मेम साहब से लेकर पड़ोसियों तक सुनाई दे। अपनी मेमसाहब के सामने वह कुछ नहीं बोल सकता है क्योंकि उसकी शादी होने

ही वाली है इसी कारण वह चुप है। इस कहानी में काम की मजबूरी को कारण निम्न वर्ग की चुप्पी सहनी पड़ती है इसका चित्रण किया है। उसकी अपनी कमज़ोरी का उच्च वर्ग कैसे फायदा उठाते हैं यह इस कहानी में चित्रित किया है।

'मौत में मदद' कहानी एक अंहमी पति की है। बुध्दन उनके घर का कामकाज कर बच ता है। 1 दिन वह अपनेमेम साहब से पैसे की मदद मांगने आता है क्योंकि उसका बेटा बीमार है। उसका पति उस बात को झुठला कर कहता है "तुम्हें कैसे मालूम, उसका बच्चा सचमुच बीमार है?"... "सचमुच बीमार है तो सरकारी अस्पताल किसलिए है?" उसकी मेम साहब उसे एक्सपीरिन और ओरसुर की गोलियां देती है और उसके साथ अपने खर्च में से ₹9 देती है। दूसरे दिन बुध्दन फिर से आता है इस बार वह मौत की खबर देने आता है। इस बार अनिल पैसे देते है और कहता है कि "मौत में आदमी आदमी की मदद नहीं करेंगा तो कब करेंगा? एक ने एक दिन सभी को यह देखना है न।" समाज की उच्च वर्गीय लोगों की सोच, मानसिकता का चित्रण किया है । जिंदगी देने के बजाए मौत में मदद की बातें करते हैं।

निष्कर्ष

मृदुला गर्ग की कहानियां नया दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। नए पक्ष को उजागर करती है। उनकी कहानियों में बदलते समय में स्त्री पुरुष संबंध कैसे बदलते हैं इसका उदाहरण है उनकी कहानियों में स्त्री पुरुष संबंधों की कशमकश का चित्रण कियागया है। उनकी कहानियों में आधुनिक स्त्री के साथ-साथ परंपरा से जुड़ी हुई स्त्री का भी जिक्र मिलता है। आधुनिक स्त्री सामाजिक और आर्थिक रूप से भले ही स्वतंत्र हो लेकिन इस पितृसत्तात्मक सोच से बरी नहीं हो पायी है। उनकी इस मानसिकता से वह आजाद नहीं हो पाई है। परंपरा में जकड़ी स्त्री को जहां वे पति का विरोध नहीं करती उसके अत्याचार सहती है, शोषण होती रहती है परंतु आवाज नहीं उठातीहै। गांवों में स्त्रियां अपने पति का अत्याचार सहन करती है परंतु उनसे तलाक नहीं लेती वह अगर उसका पति उसे छोड़ भी देता है तो वह दूसरी शादी करती है। उनके बीच कोई कानूनी तौर तरीका नहीं होता है, लेकिन निशि जैसी स्त्री देखते हैं जहां वह आधुनिक है अपने विचारों पर एक सशक्त है या आत्म निर्भर है फिर भी वह अपने पति से तलाक नहीं लेती चाहे उनसे कितनी भी पीड़ित क्यों न हो। मृदुला गर्ग ने अपनी कहानियों के माध्यम से दांपत्य एवं विवाहेतर संबंध अलग पहलुओं को उजागर किया है।

संदर्भ सूची

1. कितनी कैंदे, संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022, पृ 31
2. वही पृ 31
3. वही पृ 34
4. एक चीख़ का इंतज़ार, संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022,पृ 53
5. वही पृ 54
6. डैफोडिल जल रहे है, संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 131
7. वितृष्णा, संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 350
8. मृदुला गर्ग का का कहानी साहित्य: विविध आयाम, डॉ पुष्पलता अग्रवाल

9. लिली ऑफ दी वेली संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 51

10. दो एक फूल संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 218

11. वही पृ 224

12. रुकावट संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 14

13. अवकाश संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 43

14. वही पृ 43

15. लौटना और लौटना संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 121

16. मौत में मदद संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022 पृ 53

17. वही पृ 58

18. स्त्री – पुरुष विमर्श, डॉ मनोज कुमार 'सतीश'

19. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूल्यांकन, बगलकोट डॉ श्रीमती राजू, अमन प्रकाशन, कानपुर 2006

20. मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, अग्रवाल डॉ तारा, विद्या प्रकाशन, कानपुर, 2004

निष्कर्ष

निष्कर्ष

मृदुला गर्ग हिंदी कहानी की सशक्त कहानीकार है। 1970 में उनकी पहली कहानी 'सारिका' पत्रिका में छपी ।उन्होंने अपने लेखन कार्य से हिंदी साहित्य को एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उनकी कहानियों के कथ्य को प्रासंगिकता से जोड़ा जा सकता है।

मृदुला गर्ग ने 1970 के आसपास अपना लेखन कार्य आरंभ किया है। उनके कुल नौ कहानी संग्रह और छः उपन्यास प्रकाशित हैं। उन्होंने नाटक विधा, लेख संग्रह, संस्मरण एवं अनुवाद साहित्य में भी काम किया हैं। उन्हें व्यास सम्मान से पुरस्कृत किया गया है। 'कितनी क़ैंदे' के लिए 'कहानी' पत्रिका द्वारा सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है। वही 'एक और अजनबी' नाटक के लिए आकाशवाणी द्वारा पुरस्कार प्राप्त है 'उसके हिस्से की धूप' और 'जादू की कालीन' के लिए मध्यप्रदेश साहित्य परिषद से 'सेठ गोविंददास' पुरस्कार प्राप्त है।

स्त्री- पुरुष संबंध आदिकाल से ही बदलते रहे हैं। हालांकि आदिकाल की प्राप्त सामग्री से पता चलता है कि इस काल में स्त्रियों की स्थिति में काफी बदलाव नहीं था। उन्हें बराबर का हिस्सेदार मानते थे। स्त्री को गृहस्वामिनी की पदवी दी जाती है। धीरे धीरे स्त्री की हालत में काफी बदलाव दिखाई देता है। मनुसृति लिखी गई है जहाँ स्त्रियों के कौमार्य और विवाहित स्त्री की शुद्धता पर ज़ोर दिया हैं। स्त्री को भोग विलास की वस्तु माना जाता था। बाल विवाह, सती प्रथा, विधवा

का पुनर्विवाह अधिक समस्याएं थीं। बौद्ध काल में भिक्षुणीयों को आदर के बदले व्यभिविचारी के रूप में देखते थे। स्त्री का समाज में कोई स्थान नहीं था। मध्यकाल में स्थिति और भी भयानक हो गयी थी। स्त्रियों के लिए युद्ध होते थे। अपहरण, बलात्कार होता था और इसका ही कारण है कि यहाँ पर बाल विवाह का प्रचार था। विधवा स्त्री की स्थिति अच्छी नहीं थी। वे जिंदा रहने के बदले सती होना पसंद करते थी। कन्या हत्या का भी प्रचलन था। आधुनिक काल में स्त्री के प्रति हो रहे शोषण के कारण कई आंदोलन हुए जिसके कारण कहीं अधिनियम बनाए गए जैसे सती प्रथा पर रोक लगायी गयी है। स्त्री शिक्षा पर ज़ोर दिया गया है। जहाँ महात्मा फुले और सावित्रीबाई फुले ने गरीब और निम्न वर्ग की स्त्रियों के लिए शिक्षा के द्वार खोले। उनके लिए स्कूल बनवाए। विधवा का पुनर्विवाह का कानून लागू हुआ था। मजदूरों को वेतन बराबर देने की मांग हुई और बाल विवाह पर भी लोग रोक लगाया गया है। आज स्त्रियाँ कानूनी, सामाजिक, आर्थिक रूप से स्वतंत्र है परन्तु मानसिक स्तर से कहीं न कहीं आज भी वे पितृसत्तात्मक सोच में दबी हुई है।

मृदुला गर्ग की कहानियों में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत है। समकालीन समय का परिवेश प्रस्तुत है। उनकी कहानियों में दाम्पत्य संबंध में स्त्री संघर्ष को रेखांकित किया हैं। 'कितनी कैदी' जैसी कहानी सोचने पर मजबूर करती है कि क्या स्त्री कभी अपनी कैद से बाहर निकल पाएगी? क्या वे इस पितृसत्तात्मक सोच से बरी हो सकेगी? पुरुष प्रधान समाज के मानसिकता से वह घिरी है। 'लिलि ऑफ द वली' में आधुनिक स्थिति होकर भी निशी अपने पति को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। वह अपनी पत्नी धर्म निभाती है और पति की हर खामियों को छुपाती है। शान्तमा जैसे स्त्री के साथ हर समय उसके साथ अत्याचार ही होता है परंतु वह उसका विरोध नहीं कर पाती

है। अपनी जिंदगी इसके साथ ही जीती है। 'वितृष्णा' कहानी में पति पत्नी के अलग स्वरूप को रेखांकित किया है। विवाहेत्तर संबंध भी गर्ग के साहित्य में मिलता है। 'रुकावट' कहानी में स्त्री अपने पति को धोखा देती है केवल शारीरिक संबंध के कारण परंतु मदन के व्यवहार से उसे अपने के प्रति सहानुभूति उत्पन्न होती है। पति के सच्चे प्रेम का एहसास होता है। 'अवकाश' कहानी में नायिका अपना निर्णय बना चुकी है कि उसे समीर से प्यार है और उसके साथ ही रहना चाहती है। वह अपने पति को भी दुखी नहीं देख सकती है। इस कहानी में नायिका के करुण भाव का चित्रण किया गया है। 'लौटना और लौटना' कहानी माँ बेटे पर आधारित है। बेटा अपने माता पिता को छोड़करपाँचसाल से अमेरिका में रहता था। इसके माता पिता की स्थिति दयनीय थी परंतु इसका उस पर कोई असर नहीं है। इस कहानी पुत्र का स्वार्थी रूप दिखाई देता है। नौकर और मालिक के संबंधों पर भी प्रकाश डाला है। ' उसका विद्रोह' कहानी में काम की मजबूरी के कारण निम्न वर्ग को चुप्पी सहनी पड़ती है इसका चित्रण किया गया है। उसकी कमज़ोरी का उच्च वर्ग कैसे फायदा उठाते हैं यह इस कहानी में चित्रित किया गया है। दूसरी कहानी है 'मौत में मदद' जिसी कहानी उच्च वर्ग की मानसिकता को रेखांकित करता है। वे ज़िंदगी की के बजाय मौत में मदद करना पसंद करते हैं।

लेखिका ने अपने लेखन के मध्यम से समकालीन परिवेश का बखूबी चित्रण किया है। मोहभंग की स्थिती के बाद समाज में किस कदर परिवर्तन आए इसका प्रमाण उनके साहित्य में मिलता है। मृदुला गर्ग के साहित्य में इसका एक अलग पहलु मिलता है। उनकी कहानियाँ एक अलग दृष्टिकोण, अलग विचारधारा प्रस्तुत करती हैं।

संदर्भ सूची

संदर्भ सूची

आधार ग्रंथ

संपूर्ण कहानियाँ, मृदुला गर्ग, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2022

सहायक ग्रंथ

उत्तर भारत का संस्कृति और सामाजिक परिवेश, अनु तिवारी प्रसाद डॉ रघुनंदन, बाल शिक्षा पुस्तक संस्थान, दिल्ली प्रथम 2016

गुप्तकालीन भारत, रावत प्रदीप, आर्यन प्रकाशन, दिल्ली, 2015

नारी अस्मिता एवं पहचान, बालकृष्णन डॉ सुधा, जुगनू प्रकाशन, दिल्ली, 2014

नारि चिंतन के विविध आयाम, शर्मा डॉ विजयलक्ष्मी, मिश्रा सुकती ,भारतीय प्रकाशन, वाराणसी, प्रथम 2015

नारी शोषण समस्या एवं समाधान, डॉक्टर राजकुमार, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली 2003

भारतीय इतिहास में मध्यकाल, अनु रावत रमेश, मूल लेखक इरफान हबीब, ग्रंथ शिल्पी, दिल्ली प्रथम संस्करण 1999,परिवर्तित दूसरा संस्करण 2002

भारतीय विवाह संस्था का इतिहास, राजवाड़े काशीनाथ विश्वनाथ, नवोदय सेल्स दिल्ली संस्करण 2005

भारतीय समाज एवं महिला सशक्तिकरण, मुंजजीभीसे डॉ रामचन्द्र, विकास प्रकाशन, कानपुर, 2013

भारतीय समाज में महिलाएं, देसाई मीरा, ठक्कर उषा, अनु दूसरी या डॉ सुभी, नेशनल बुक ट्रस्ट दिल्ली 2009

भारत में परिवार तथा पारिवारिक जीवन का विश्लेषण, शुक्ल साधना, आकृति प्रकाशन, दिल्ली 2013

भारतीय समाज एक विश्लेषणात्मक अध्ययन, यादव सूर्यभान, वंदना पब्लिकेशन नई दिल्ली 2012

महिला एवं विकास,डॉ राजकुमार,अर्जुन पब्लिशिंग हाउस,दिल्ली 2003

महिला साहित्यकारों का नारी चित्रण, वर्मा डॉ राजकुमारी, अध्ययन पब्लिशिंग एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, दिल्ली, 2009

मृदुला गर्ग के कथा साहित्य का मूल्यांकन, बागलकोट डॉश्रीमती राजू, अमन प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2006

मृदुला गर्ग का कथा साहित्य, अग्रवाल डॉक्टर तारा, विद्या प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2004

महिलाएं स्थिति और अधिकार, चौरे डॉ अजय आर, तिवारी कुमार डॉ सुनीत, माया प्रकाशन, कानपुर, प्रथम संस्करण 2020

महिला एवं कानून, मेहता चेतन, आशीष पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली, 1996

महिला सशक्तिकरण, वशिष्ठ सरिता, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली 2010

स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, चतुर्वेदी जगदीश्वर, अनामिका पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्युटर्स प्रा लिमिटेड, दिल्ली, प्रथम संसरण 2000

समकालीन परिवेश और साहित्य, शर्म डॉ ब्रह्मस्वरुप, भारतीय साहित्य प्रकाशन, मेरठ, 2018

स्त्री : अस्मिता और अस्तित्व, कमल एम. चि. , मित्तल बुक एजेंसी, दिल्ली, 2012

समकालीन हिंदी कहानी का सामाजिक सरोकार, सिंह डॉ. नरेंद्र नाथ, आकाश पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रिब्युटर्स, ग़ाज़ियाबाद प्रथम संस्करण 2010

स्त्री लेखन: स्वप्न और सकल्प, अग्रवाल रोहिणी, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2011

स्त्री सृजनात्मक का स्त्री पाठ, डॉ संदीप रणभिरकर, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2016

स्त्री मुक्ति के प्रश्न और समकालीन विमर्श, सिंह डॉ अल्पना, सिंह डॉ आलोक कुमार, देव प्रकाशन, दिल्ली प्रथम संस्करण 2015

स्त्री संघर्ष का इतिहास, कुमार राधा, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 2002

अंतरजाल साक्षात्कार

https://youtu.be/EP7k44mUhAI?si=bhNTZLmCgCCOr6yt

https://youtu.be/0wv5UGXZ3Io?si=HwuUVwI2iniaaMed

https://youtu.be/5Cvv_7iskuw?si=BuOgvOvqdPpFPp2p

https://youtu.be/3bkqp1fyQ20?si=3Wrr76qdUnNN_M_e

https://youtu.be/NreumMmUzRc?si=HGt4qRaZhgSvE1qH

https://youtu.be/TPe8Uw-ygbA?si=p10DAAXoztWkv8b8

पत्रिकाएँ

आधुनिक हिंदी कहानी:नारी चेतना एवं मर्द आलोचना, मृदुला गर्ग, हंस, मेइ 1993

किसी एक फूल का नाम लो (मृदुला गर्ग से अनामिका की बातचीत), आनामिक, नया ज्ञानोदय, अगस्त 2007

सांस्कृतिक नीति एक प्रदूषिक आहार, मृदुला गर्ग, हंस, नवम्बर 1992

मूल्य और साहित्य, मृदुला गर्ग, हंस 2009

लेखिका की दृष्टि में पुरुषवादी नैतिकता और अश्लीलता, मृदुला गर्ग, हंस, 2005

अंतर्जाल आलेख

भारतीय संस्कृति और समाज, अरोड़ा प्रियंका, श्रृंखला एक शोधपरक वैचारिक पत्रिका, मई, 2019

प्रारंभ से मध्यकाल तक स्त्रियों की दशा,प्रवीन कुमार,सविता देवी, कृष्णा देवी, पंकज International journal of applied research 2023

मृदुला गर्ग की कहानियों में स्त्री अस्मिता के प्रश्न, अंकिता मिश्रा, IJSRST 2016

मध्यकालीन भारतीय समाज में स्त्रियों का स्थान: एक अध्ययन, डॉ सुनील कुमार, IJCRT 2019

मुग़ल काल में शाही महिलाओं की शैक्षिक स्थिती, पवन कुमार, International journal of research 2018

गोंय विद्यापीठ
ताळगांव पठार,
गोंय - ४०३ २०६
फोन : +९१-८६६९६०९०४८

(Accredited by NAAC)

ATMANIRBHAR BHARAT
SWAYAMPURNA GOA
Goa University
Taleigao Plateau, Goa-403 206
Tel : +91-8669609048
Email : registrar@unigoa.ac.in
Website : www.unigoa.ac.in

Ref. No.: GU/LIB/ATTENDANCE CERT./2024/275

Date: 13/05/2024

TO WHOM SO EVER IT MAY CONCERN

This is to certify that Miss Pavitra Ramakant Usgaonkar, a student of Goa University, M.A. (Hindi), visited the Goa University Library for her reference work on the following dates and completed 28 Hours & 25 Minutes of research internship as a part of her M.A. dissertation.

The detailed dates and times she visited are attached herewith.

This certificate has been issued at the written request of Assistant Professor Ms. Mamata Deepak Verlekar .

for

University Librarian
(Dr. Sandesh B. Dessai)

Mr. Nandkishor K. Bandekar
Asst. Librarian
Goa University Library
Taleigao Goa

GOA UNIVERSITY
LIBRARY
GOA

VISITS TO THE GOA UNIVERSITY LIBRARY

SR. NO.	DATE	TIME	HOURS
1.	13/7/2023	9:30-9:41	11min
2.	14/7/2023	1:30-3:50	2hr 20min
3.	17/7/2023	2:15-3:50	1hr 25min
4.	18/07/2023	9:30- 10-50	1 hr 20 min
5.	18/07/2023	3:35-4:30	55min
6.	19/07/2023	4:11-4:31	20min
7.	28/07/2023	4:36-4:42	6min
8.	7/08/2023	1:35-4:56	3hr 21min
9.	18/08/2023	3:40-4:00	20 min
10.	22/08/2023	2:5-2:40	35min
11.	24/08/2023	3:43-4:43	1hr
12.	8/09/2023	4:23-5:09	46min
13.	26/09/2023	4:06-5:00	54min
14.	03/10/2023	1:41-5:13	3hr 32min
15.	05/10/2023	3:20 -5:40	2hr 20 min
16.	06/10/2023	3:33-5:33	2hr
17.	11/10/2023	11:50-2:25	2hr 35min
18.	6/12/2023	11:23-1:25	2hr 2min
19.	9/01/2024	12:45-12:50	5min
20.	10/01/2024	11:30-1:40	2hr 10min
21.	29/01/2024	11:38-11:39	1min
22.	30/01/2024	1:34-1:38	4min
23.	27/02/2024	12:04-12:07	3min
Total Hours			**28 Hours 25 Minutes**

for

Signature of the Guide
Asst. Prof. Ms. Mamata Deepak Verlekar

Signature of the University Librarian
Dr. Sandesh B. Dessai

Signature of the Student
Miss Pavitra Ramakant Usgaonkar